RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 मार्च 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 मार्च

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका अप्रैल 2019

एक चुप्पी जगह

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र: हबीब अली

सब कुछ कह देने
ध्वनि की प्यास लगती है
कण्ठ सूखता है
आवाज़ नहीं निकलती
कोई मेरी सुन ले
कुछ अपनी कह दे
तो प्यास बुझे...

मूल्य ₹ 50

मधुमक्खी और कीटनाशक

रोहन चक्रवर्ती

अंक 391 अप्रैल 2019

चकमक

इस बार

मधुमक्खी और कीटनाशक - रोहन चक्रवर्ती	2
चुप्पी जगह की चुप्पी - विनोद कुमार शुक्ल	4
अंग प्रत्यारोपण के साथ एलर्जी भी मिली	8
तुम भी जानो	9
क्यों क्यों?	10
पेंग्विन के अण्डों की कुल्फी क्यों नहीं बन जाती	13
दिवाली - रोहित नेमा	14
गलतियाँ ढूँढो	15
मार्टिन लूथर किंग, जूनियर	16
एक पक्षी रिवर टर्न... - श्रुति शर्मा, जितेश शेल्के	18
सूखती हुई नदी और मुनिया - प्रकाश कान्त	19
ये भिनभिनाहट क्या है - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन	22
तुम भी बनाओ	24
गोपी गवैया बाघा बजैया - उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी	25
अमलतास और विशु - गीता रामस्वामी, सुहेल कादर	30
मेरा पन्ना	34
भूल-भुलैया	40
माथापच्ची	41
चित्रपहेली	43

मोहम्मद रज़ा, पहली, के के एकेडमी लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सम्पादकीय सहयोग
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

अखिरी किस्त

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

चुप्पी जगह की चुप्पी

बहुत सुबह का समय। कहीं अँधेरा ज़्यादा था, कहीं कम अँधेरा था। कँधारू, पेड़ों के नीचे जाता हुआ बहुत अँधेरे में था। कँधारू के कन्धे पर कुछ लदा था। रास्ते में कँधारू को भैरा दिख गया। भैरा जंगल की तरफ से आ रहा था। उसके कन्धे पर पेड़ की एक मोटी शाखा थी। उसे जंगल में पड़ी दिखी थी। जिसे वो उठाकर ला रहा था।

भैरा कँधारू के पीछे चल पड़ा। उसने कँधारू के कन्धे पर रखे बाबूलाल होटल के दरवाज़े के पल्ले को देख लिया था। वह जान गया कि बाबूलाल होटल खुलेगी। यह संयोग नहीं था। बाबूलाल महराज को मालूम हो गया था कि भैरा को जंगल में एक मोटी पेंसिल-शाखा मिल गई है और वह छिलवाने आएगा।

भैरा ने कहा, "अच्छा हुआ तुम मिल गए। लट्ठा लादे आ रहा हूँ। वज़नी है। अब अधिक दूर चला नहीं जाता। यही कहीं होटल खोल लो।"

कन्धारू बोला, "अभी ठीक जगह नहीं मिली। महराज ने कहा है कि अबकी बार होटल अधिक दिनों तक खुली रहेगी। शायद बहुत-सी पेंसिलें छीलनी हैं। महराज को होटल के दूसरे काम भी हैं।"

भैरा बोला, "कितने दिनों तक होटल खुली रहेगी?"

कँधारू बोला, "महराज का बहुत दिन अधिक से अधिक सात दिन का होता है। और रोज़ दो घण्टे के लिए होटल बन्द भी रखनी पड़ेगी। कन्धे पर दरवाज़ा रखकर इधर-उधर होटल खोलने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है।"

भैरा बोला, "बहुत दूर मतलब?"

कँधारू ने कहा, "मेरा बहुत दूर, जितनी दूर जा सके उतनी दूर। खुद नहीं रुके, महराज जहाँ रोक दें। अभी नदी के किनारे तक शायद जाना पड़ेगा। नदी के किनारे मुझे महराज रोक देंगे। नहीं रोकेंगे तो मैं नदी के अन्दर चला जाऊँगा।"

भैरा बोला, "तो नदी में डूब जाओगे।"

कँधारू बोला, "लकड़ी के पल्ले के सहारे नदी में तैरना पड़ेगा और उस पार जाना पड़ेगा। पीछे-पीछे तुम लकड़ी के लट्ठे के सहारे तैरना। लट्ठे के ऊपर बैठकर भी जा सकते हो।"

भैरा ने कहा, "ठीक है।"

कँधारू बोला, "नदी ज़्यादा दूर नहीं है। नदी के पास होने का हवा में आभास है। अधिक पास नहीं जाते। बाढ़ आ गई तो होटल डूब जाएगी।"

अचानक कँधारू रुक गया। जैसे कोई अदृश्य लगाम थी जो महराज के हाथ में थी जिससे कँधारू रुक गया। रेतीली जगह थी। कभी यहाँ ईंटों की भट्टी रही

होगी। जगह-जगह ईंटों के टुकड़ों के ढेर थे। ईंटों की एक थप्पी के पास कँधारू ने पल्ले को गाड़ दिया। एक पेड़ था और उस पेड़ की शाखा से पल्ले की साँकल को अटका दिया था। पल्ला पूर्व दिशा की तरफ था।

कँधारू बोला, “सुबह होते ही पल्ला खोल देंगे, होटल खुल जाएगी।”

भैरा ने अपने कन्धे के लट्ठे को वहीं गिरा दिया। वह लट्ठे पर थका हुआ बैठ गया और होटल खुलने का इन्तज़ार करने लगा। कँधारू सुबह होने का इन्तज़ार कर रहा था।

•

समय जल्दी-जल्दी बीत रहा था। पंखवाले लड़के के साथ सब उसके घर जा रहे थे। जंगल की चिड़िया बहेलियों से सावधान रहती थी। पंखवाले लड़के को भी सावधान कर देतीं। सुनचुक्की का तालमेल चिड़ियों से बन गया था। अब जंगल कम घना हो रहा था। वे एक खुली जगह पहुँचे। बीच में एक सुन्दर, रंग-बिरंगी पंखों से सजी झोंपड़ी थी। पंखवाले लड़के की माँ झोंपड़ी के सामने खड़ी थी। हवा से झोंपड़ी के सारे पंख हिलते। देखकर लगता कि झोंपड़ी हवा में थिरक रही है। झोंपड़ी के बाहर चारों ओर जगह-जगह चिड़ियों के घोंसले भी थे। बया के घोंसले लटके दिखाई दे रहे थे। हल्की पीली बया घोंसले पर लटकी झूलती दिख रही थी। बहुत-सी रंगीन चिड़ियों से झोंपड़ी की बाहरी सुन्दरता अद्भुत थी। हवा में शहद की मीठी खुशबू थी। गहरी साँस खींचने से मन भर जाता था। प्रवेश द्वार पर एक बड़ा पहाड़ी-करण तोता इधर-उधर टहलता, सबके अन्दर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। नृत्य करने की प्रतीक्षा में झोंपड़ी में खुँसे हुए पक्षियों के पंख जैसे फैल गए।

•

चुप्पी जगह की चुप्पी के समाप्त हो जाने के बाद सुनचुक्की का नाम सोनाचुक्की कुछ दिनों तक चला। फिर उसका नाम हमेशा के लिए सोनचुक्की हो गया। सुनचुक्की उसे कोई नहीं कहता।

•

बोलू का बोलकर चलना अब नहीं होता। अब वह सोचकर चलता है। चलते समय सोचता है। पत्थर की किताब के बारे में जब बोलू सोचता तो वह अपने आप बौने पहाड़ की तरफ खिंचा हुआ चल पड़ता। बिना बोले सोचते हुए। वह चुपचाप चलता। जब गहरी सोच में रहता तो उसके चलने की गति बढ़ जाती। जब वह दौड़ता तो लगता कि कोई बहुत ज़रूरी बात होगी।

कंकड़-पत्थर बोलू के साथ हमेशा रहता। कूना भी रहती। धीरे-धीरे कंकड़-पत्थर की एक कथा बनती जा रही थी।

एक चुप्पी जगह की दुनिया

सुशील शुक्ल

एक चुप्पी जगह नॉबिल इस अंक में पूरा हो रहा है।

बोलू, भैरा, प्रेमू, कूना, किरण, बाबा, चन्दू, सुनचुक्की, गौरैया....सब याद आएँगे। सिर्फ ये ही नहीं। वो जहाँ मीठा समोसा मिलता था। बाबूलाल की वो होटल।... जब यह कहानी खतम हो जाएगी तो ये किरदार कहाँ चले जाएँगे? कभी कूना याद आएगी - बाबा हम बोलते हैं तो आप चुप कराते हो। क्या आप ने कभी तोतों को टेंटें करने से मना किया? चिड़ियों को चहचहाने से रोका?...तुम्हें कभी किसी किताब का कोई किरदार दिखा? क्या पता कभी वो मिल जाए। कभी-कभी एक ही किरदार अलग-अलग लोगों में मिलेगा। कूना जैसा बोलने वाली लड़की मिलेगी। कोई होगी जिसकी चाल कूना जैसी होगी। कोई तीसरी लड़की मिलेगी जो कूना की तरह दिखती होगी। कोई कूना की तरह हँसती होगी। कितने ही लोगों को मिलाकर तुम्हें एक कूना मिलेगी। क्या पता लेखक को भी कूना ऐसे ही मिली हो? कोई दोस्त, रिश्तेदार, पड़ोसी या परिचित जब नहीं रहता तो उसकी याद रहती है। तरह-तरह से हम उसे याद करते हैं। किताबों के किरदार पहले याद की तरह आते हैं। फिर वे ज़िन्दा हो जाते हैं। हमें तरह-तरह से दिखने-मिलने लगते हैं। एक दिन मैंने एक छोटे-से कस्बे की एक होटल में समोसा खाया। मैंने बाबूलाल की होटल पहचान ली। पर इस होटल पर उस दिन बैठा आदमी बाबूलाल नहीं था। क्या पता किसी दिन बाबूलाल मिल जाए। किसी दूसरी होटल पर बैठा। तब मैं उसे उसकी होटल का पता बता दूँगा।

विनोदजी ने अपनी भाषा खुद बनाई है। वे किसी बात को वैसे नहीं कहते जैसा आमतौर पर कहा जाता है। उनके मन में भाषा का एक टकसाल होगा जिसमें दिन-रात शब्दों, वाक्यों की ढलाई का काम चलता होगा। उनके पास रहने वाले को लगेगा कि वे चुप हैं। एक चुप्पी जगह में उनकी मन की दुनिया है। जहाँ उठापटक है, धमाचौकड़ी है। मन की दुनिया मन में ही नहीं बन जाती। वह बाहर से बातचीत करते हुए मन में बनती रहती है।

इसी उपन्यास में उन्होंने एक जगह लिखा है-

कुछ बदल गया था। कुछ नहीं बदला था। यह ऐसा था कि बहुत दिन एक दिन की तरह बीत गया।

पहला वाक्य है - कुछ बदल गया था। यानी बहुत कुछ नहीं बदला था। पर अगला वाक्य यह नहीं कहता। वह कहता है - कुछ नहीं बदला था। मतलब? 'कुछ नहीं बदला था' मतलब बहुत कुछ बदल गया था? नहीं। मतलब बदलना बहुत धीमा था। बहुत धीमा। इतना कम कुछ बदला था कि वह - कुछ नहीं बदला - जैसा था। अब अगला वाक्य पढ़िए - यह ऐसा था कि बहुत दिन एक दिन की तरह बीत गया। बहुत दिन एक दिन की तरह बीत गए थे - ऐसा नहीं कहा है। ऐसा कहेंगे तो हम जैसे मान लेंगे कि बहुत दिन बहुत दिन थे। और वे एक दिन की तरह बीते। इन बहुत दिनों में बहुत सुबहें थीं, बहुत शामें थीं। बहुत रातें थीं। तब फिर वे बहुत दिन ही हुए ना। पर ऐसा नहीं है। जैसे - एक दिन - होता है वैसा यह - एक बहुत दिन - था। दिन तो मानी हुई अवधि है। तो अगर हम एक दिन बहुत दिनों को मान लें तो। अगर आपको ऐसा कोई भाव कहना हो तो कैसे कहेंगे कि बहुत-सा समय बीत गया जिसमें कुछ हुआ ही नहीं। किसी बात को को अलग तरह से कहकर हम भाषा में उसके लिए जगह बनाते हैं।

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

एक-

पहाड़ अगर दौड़ता
तो उसका एक कदम
हज़ार साल में उठता
और भारी-भरकम पहाड़
अपने एक कदम से
चींटी का एक कदम बढ़ाता
पहाड़ कभी इसीलिए
चींटी के साथ नहीं दौड़ता
तो बताओ चींटी
यदि दो कदम दौड़े
तो पहाड़ रहेगा हज़ार साल पीछे
या दो हज़ार साल पीछे?

दो-

एक लाइन में बौना पहाड़ दौड़े
और लौटे बार-बार
उसके हर उठे कदम के नीचे
एक-एक चट्टान कोई रखता जाए
तो बौना पहाड़ एक श्रेणी में बड़ा हो जाए।
क्या उसे बाबूलाल महराज का
मीठा समोसा भी खिलाया जाए?

मूल्य - ₹ 250
चकमक में धारावाहिक रूप में छपे इस उपन्यास को मँगवाने का पता -
जुगनू प्रकाशन, इकतारा
ई-7/413 एचआईजी प्रथम तल, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016
फोन - +91 9109915118, +91 755 4939472
www.ektaraindia.in; publication@ektaraindia.in

अंग प्रत्यारोपण के साथ एलर्जी भी मिली

मूँगफली से एलर्जी कई लोगों को होती है। आमतौर पर इस एलर्जी के बारे में हमें बचपन में ही पता चल जाता है और हम सीख जाते हैं कि हमें खाने की किन चीज़ों से बचकर रहना चाहिए। तो, जब एक वयस्क महिला को पीनट-बटर-जैम सैण्डविच खाने के बाद एकदम से भयानक एलर्जी हुई तो सबको काफी आश्चर्य हुआ।

हुआ यूँ कि 68 वर्षीय महिला एम्फेसीमा से पीड़ित थी। एम्फेसीमा में फेफड़ों के वायुकोश क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और साँस लेने में कठिनाई होती है। इसी के इलाज में, एक अन्य व्यक्ति का एक फेफड़ा महिला के शरीर में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया गया था।

अचानक एक दिन महिला को सीने में जकड़न महसूस होने लगी और साँस लेने में भी दिक्कत हो रही थी। महिला के अनुसार उन्हें यह दिक्कत पीनट-बटर-जैम सैण्डविच खाने के बाद शुरू हुई। लेकिन महिला में फूड एलर्जी के अन्य कोई लक्षण (चकत्ते या पेटदर्द) दिखाई नहीं दे रहे थे।

चूँकि महिला को पहले कभी यह समस्या नहीं हुई थी इसलिए डॉक्टर ने जिस व्यक्ति का फेफड़ा महिला के शरीर में लगाया था, उसकी एलर्जी के बारे में जानकारी ली। पता चला कि उस व्यक्ति को मूँगफली से एलर्जी है। यानी कि फेफड़े के साथ-साथ महिला को एलर्जी भी मिल गई थी।

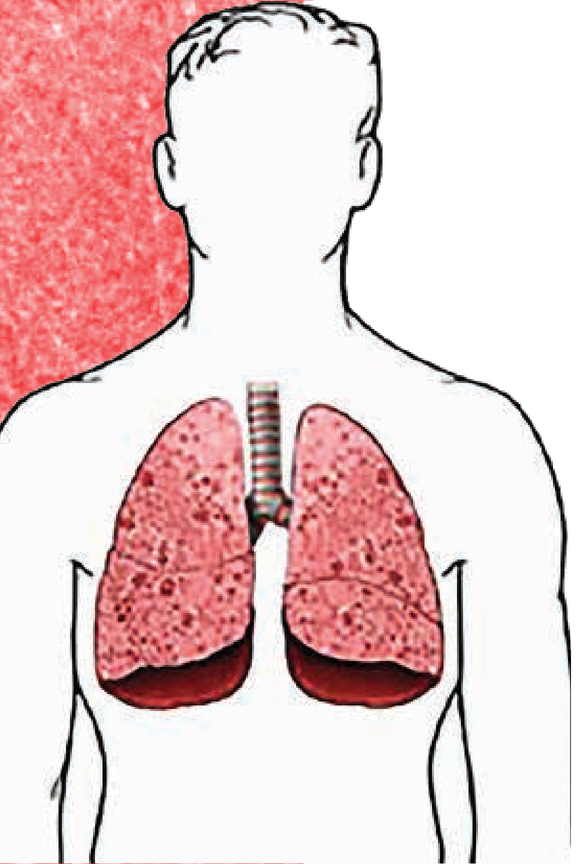

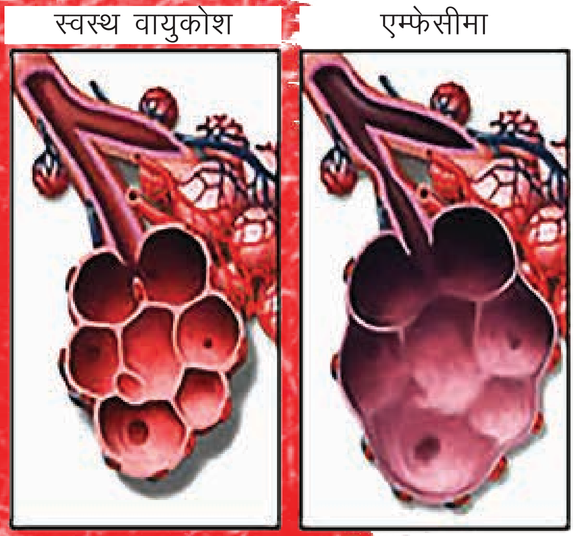

हालाँकि यह बहुत कम होता है कि अंग के साथ-साथ अंग दान करने वाले की एलर्जी भी अंग प्राप्तकर्ता में हस्तान्तरित हो जाए। मगर लिवर, किडनी, फेफड़े, अस्थि मज्जा, हृदय के प्रत्यारोपण के मामलों में ऐसा देखा गया है कि अंग दान करने वाले की फूड एलर्जी अंग प्राप्तकर्ता में हस्तान्तरित हुई है।

एक अन्य शोध के मुताबिक अंग प्रत्यारोपण के दौरान फूड एलर्जी उन मामलों में हस्तान्तरित होती है जिनमें अंग प्राप्तकर्ता को टैक्रोलिमस नामक औषधि दी गई हो। दरअसल शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली किसी भी बाहरी चीज़ को नष्ट कर देती है। अंग प्रत्यारोपण के बाद प्रतिरक्षा प्रणाली प्रत्यारोपित अंग को बाहरी समझकर उसे नष्ट न कर दे, इसके लिए टैक्रोलिमस औषधि दी जाती है। इस महिला को भी टेक्रोलिमस औषधि दी गई थी।

आगे की जाँच में इस बात की पुष्टि भी हुई कि महिला को मूँगफली के अलावा काजू-बादाम, अखरोट और नारियल से भी एलर्जी हो गई है। यह अभी स्पष्ट नहीं है कि प्रत्यारोपण के साथ आने वाली एलर्जी ताउम्र रहती है या नहीं। किसी-किसी मामले में समय के साथ एलर्जी खतम भी हो सकती है। फिलहाल डॉक्टर, महिला की मूँगफली और अन्य गिरियों से एलर्जी की लगातार जाँच करेंगे और देखेंगे कि क्या वक्त के साथ स्थिति में कोई बदलाव आता है।

स्रोत फीचर्स से साभार

तुम भी जानो

मतदान की कुछ बातें

कुछ दिनों से टीवी, रेडियो और अखबारों में मतदान के बारे में कई बातें सुनने को मिल रही हैं। कइयों का आग्रह है कि वोट सभी को देना चाहिए। लेकिन यह सब के लिए मुमकिन नहीं है, वोट देने की एक उम्र जो तय है। हमारे देश में मतदान करने के लिए 18 वर्ष का होना ज़रूरी है। लेकिन कुछ ऐसे भी देश हैं जिनमें 16 वर्ष के होने पर तुम मतदान कर सकते हो। ये हैं - आर्जेन्टीना, ऑस्ट्रिया, ब्राज़ील, क्यूबा, गरन्से, आइल ऑफ मैन, जर्सी, मॉल्टा, निकारागुआ और स्कॉटलैंड। बॉस्निया हर्ज़गोवीना में तो 16 वर्ष के वही नागरिक मतदान कर सकते हैं जिनके पास नौकरी हो। लेकिन युनाइटेड अरब अमीरात में तो 25 साल की उम्र में ही कोई वोट दे सकता है। सोचो, कितने युवा देश के नेतृत्व चयन की प्रक्रिया से वंचित रह जाते हैं।

गणित के सवाल का एक अनोखा जवाब

सातवीं कक्षा में गणित का एक सवाल था कि अगर एक महिला 15 महीनों में 18,000 रुपए कमाती है तो 7 महीनों में कितना कमाएगी? और 30,000 रुपए कमाने में उसे कितना समय लगेगा? एक बच्चे ने हिसाब लगाया कि इतने पैसे कमाने में तो महिला को 25 महीने लग जाएँगे। लेकिन उसका जवाब यहीं खतम नहीं हुआ। अन्त में उसने लिखा कि इस महिला कर्मचारी को कम वेतन मिलता है। आमतौर पर हम गणित के सवालों का सही जवाब माँगने-देने के चक्कर में रहते हैं। लेकिन इस बच्चे ने हमें याद दिला दिया कि कभी-कभी उसे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जोड़कर भी देखने की ज़रूरत होती है। ट्विटर पर इस बच्चे की कॉपी की यह फोटो वायरल हो गई है।

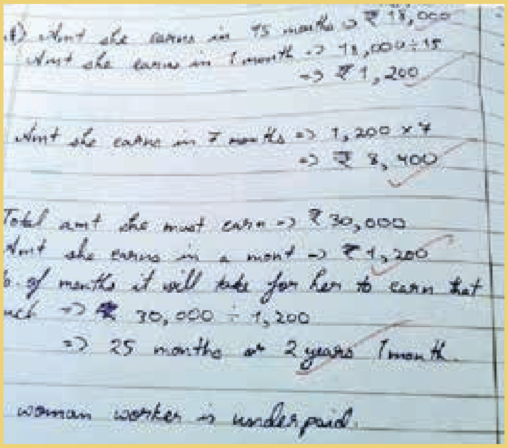

तीसरी पास कृषि वैज्ञानिक

क्या ऐसा हो सकता है? वैज्ञानिक बनने के लिए तो ढेर सारी पढ़ाई करनी पड़ती है, डिग्री हासिल करनी पड़ती है। लेकिन यह हमेशा ज़रूरी नहीं है। 1983 में अपने धान के खेत में काम करते समय तीसरी पास दादाजी रामाजी खोब्रगड़े का ध्यान कुछ ऐसी बालियों की ओर गया जो सामान्य बालियों से अलग थीं। दादाजी ने इस धान को सहेजकर उगाया और तब उनके ज़हन में आया कि धान की इस किस्म की भरपूर फसल मिल सकती है। फसल बेचने के लिए जब दादाजी कृषि उपज मण्डी में गए तब इस किस्म का कोई नाम न होने के कारण उन्हें कुछ दिक्कतें आईं। उस समय एचएमटी की घड़ियाँ बहुत लोकप्रिय थीं और इस बढ़िया व खुशबूदार चावल की किस्म का नाम एचएमटी रखा गया। इसी तरह अगले 10 वर्षों में दादाजी ने धान की आठ और नई किस्में विकसित कीं जिन्हें उन्होंने अपने नाती-पोतों और गाँव के नाम दिए – विजय, नान्देड़, नान्देड़-92, नान्देड हीरा, डीआरके, नान्देड़ दीपक, काटे एचएमटी और डीआरके-2।

क्यों क्यों?

क्यों क्यो में इस बार हमारा सवाल था - अगर तुम किसी को गायब कर सको, तो किसको गायब करोगे और क्यों?

हर बार की तरह हमने यह सवाल कई बच्चों से पूछा। हमारे पास पहली से लेकर आठवीं तक के बच्चों से ढेर सारे जवाब आए। उनमें से कुछ हम यहाँ दे रहे हैं। जहाँ बात कुछ गम्भीर व निजी लगी हमने बच्चे का नाम बदल दिया है। इस बार के जवाब कानपुर के अपना स्कूल, फलटण के कमला निम्बकर बालभवन, धमतरी और माटली के अज़ीम प्रेमजी स्कूल, पटना के बाल भवन किलकारी, उत्तराखण्ड के चिराग स्कूल, नई दिल्ली के द हेरिटेज स्कूल, देवास के केरल पब्लिक स्कूल और सेक्रेड हार्ट स्कूल के बच्चों ने भेजे हैं।

तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपना जवाब लिख भेजना...

अपने आपको, क्योंकि मुझे पढ़ने और लिखने से सख्त नफरत है।

वेदान्त, आठवीं

मैं अपने पड़ोसी को गायब करूँगा क्योंकि वो रोज़ कीचड़ करता है और परेशान करता है।

आदित्य, तीसरी

भारत पाकिस्तान में जो युद्ध हो रहा है, वो मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे कभी-कभी लगता है कि दोनों देश जलकर राख न हो जाएँ। इस बात का मुझे बहुत डर लगता है। पाकिस्तान ने एक चीज़ बहुत अच्छी कर दी कि हमारे वीर कमाण्डर अभिनन्दन सर को वापस भारत भेज दिया। हमने बहुत गलतियाँ कर दी है। और हमारे दोनों देशों में हिन्दू-मुसलमान भेद नहीं होना चाहिए। मैं पाकिस्तान को मेरा ही देश मानता हूँ और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जो युद्ध हो रहा है, उसे मैं गायब करूँगा।

राजेन्द्र, चौथी

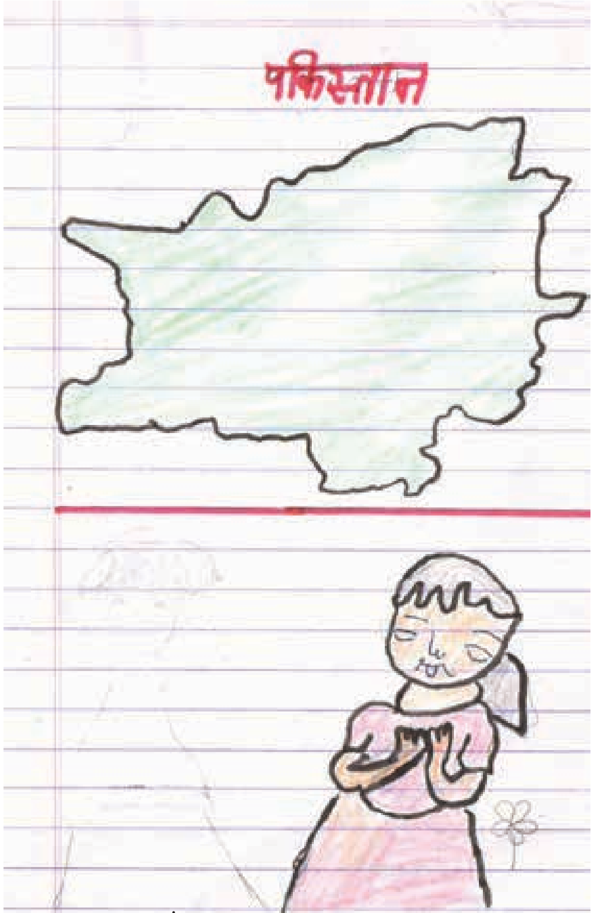

चित्र: रानी, पाँचवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, उत्तर प्रदेश

मैं अपने घरवालों को गायब करना चाहूँगा, क्योंकि मुझे घर से बाहर निकलने नहीं देते, और मुझे दिन भर पढ़ने को कहते हैं। मैं अपने दोस्तों के संग खेल भी नहीं पाता हूँ, और मुझे मोबाइल पकड़ने नहीं देते हैं। मुझे मारते हैं, इस कारण मैं अपने घरवालों को गायब करना चाहता हूँ, जिससे मैं खुशी-खुशी रहूँगा।

रोहित, सातवीं

मैं दीवाल को गायब करूँगा क्योंकि दीवाल से सिर लग जाता है।

देवांश, पहली

••••••••••

मैं पटाखों की फैक्ट्री गायब करना चाहता हूँ क्योंकि पटाखों की फैक्ट्री में छोटी उम्र के बच्चे काम करते हैं। कभी-कभी तो बच्चों के हाथ से माचिस जल जाती है और पटाखों की फैक्ट्री में विस्फोट हो जाता है। इसकी वजह से हाथ-पाँव जल जाते हैं। इसीलिए मैं पटाखों की फैक्ट्री गायब करना चाहता हूँ।

आर्यन, चौथी

••••••••••

हम सपने को गायब करेंगे क्योंकि रात को बुरा सपना देखने से हमको डर लगने लगता है।

राम, तीसरी

••••••••••

मैं खुद को गायब करूँगा। पूरी दुनिया घूमकर आऊँगा। चोरों को पकड़ूँगा। हवाईजहाज़ में बैठूँगा।

आशुतोष, पाँचवीं

••••••••••

मैं अपनी क्लास मॉनिटर को गायब करना चाहता हूँ क्योंकि वह किसी भी बच्चे का नाम शिकायत लिस्ट में लिख देती है जबकि वह बच्चा कुछ भी गलती नहीं करता है। वह ऐसा बस लड़कों के साथ करती है। उसकी दोस्त उसके पीछे गप्प मारती रहती हैं। एक बार मैं अपने दोस्तों की बोतल में पानी भरने जा रहा था तो उसने कहा - "ये ले, हम सबका पानी भी भर दे।" मैंने उसकी एक न सुनी। एक बच्चा कुछ दिन नहीं आया तो वो कहती है -"तुम कहाँ थे?"उसने कहा - "मुझे फीवर हुआ था।" उसने कहा "मैम को फीवर होता है तब भी आती हैं।" लेकिन जिस मैम को फीवर होता है वे आती नहीं हैं। उसे भी जब फीवर होता है, तब नहीं आती है। वो तो लड़कों को महत्त्व देती ही नहीं है।

यासिर, चौथी

••••••••••

मैं स्कूल के सब शिक्षकों के चश्में गायब करूँगा क्योंकि जब भी मैं कोई शैतानी करता हूँ वो हमेशा मुझे पकड़ लेते हैं।

तनवीर, पाँचवीं

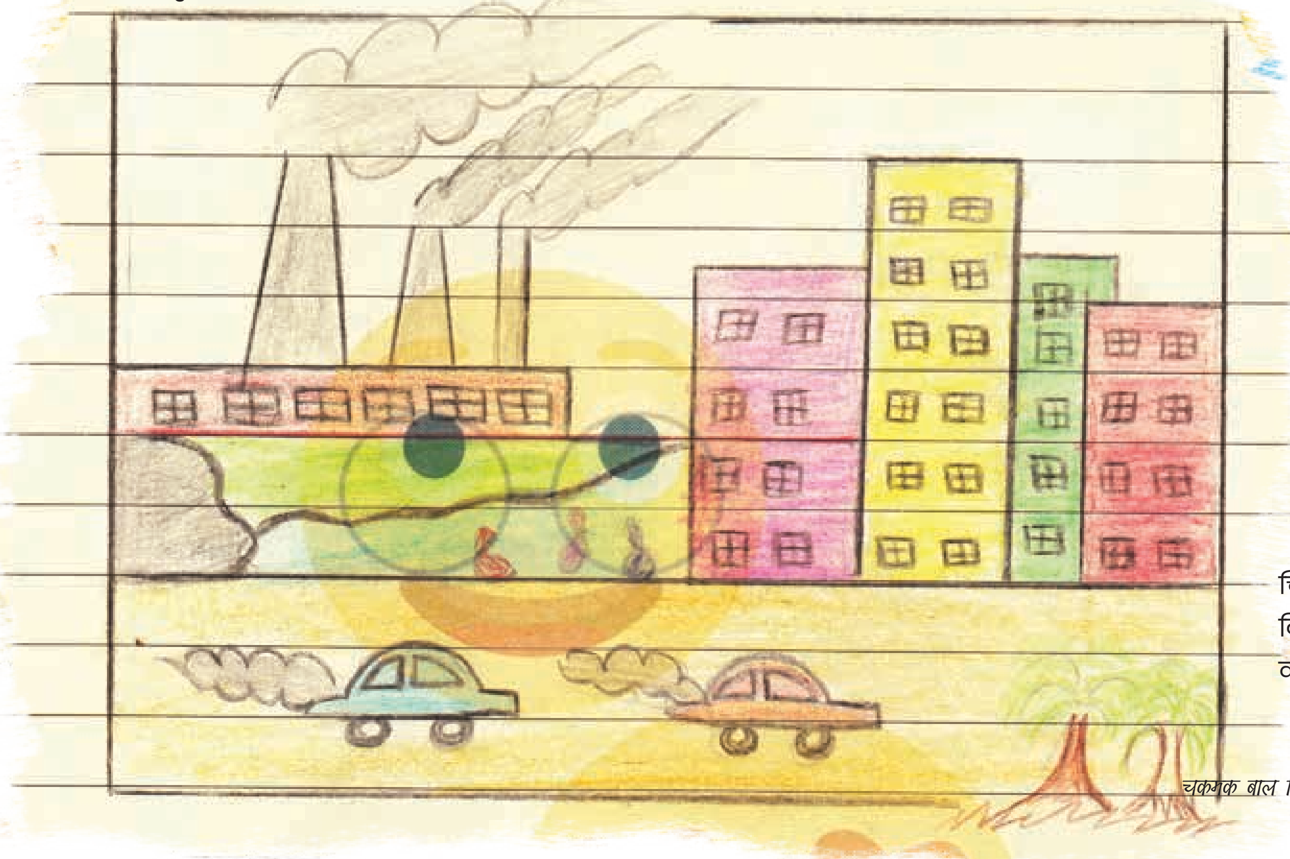

चित्र: अजफर मुज़ीब, तीसरी
दिल्ली पब्लिक स्कूल
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

क्यों क्यों?

पापा के हाथ बाँधकर कमरे में बन्द कर देंगे क्योंकि वो मारते बहुत हैं।

राकेश, चौथी

मैं अपनी परछाईं को गायब करना चाहती हूँ क्योंकि परछाईं काली होती है।

मानसी, पाँचवीं

एक बार की बात है कि रामू, शामू, प्रकाश, गौतम, राम और ग्रामवासियों से एक जादूवाले ने कहा, "कौन जादू सीखेगा? सभी ने कहा, "हम सभी जादू सीखेंगे दूसरे ग्रामवासियों को हँसाते रहेंगे, चलो हमको जादू सिखा दो।" जादूवाले ने कहा, "किसे गायब करूँ?" बच्चे बोले, "ग्रामवासियों को गायब कर दो।" जादूवाले ने कहा, "क्यों करें ग्रामवासियों को गायब?" बच्चों ने कहा, "हमें शिक्षा की जरूरत नहीं, ऐसे गायब करो कि लौटकर भी न आएँ।" "तो ठीक है, चलो कर देता हूँ गायब", जादूवाले ने कहा और उसने बच्चों को गायब कर दिया। फिर ग्रामवासियों को भी गायब कर दिया और अपना सामान समेटकर खुद भी गायब हो गया।

पियूष, छठवीं

मैं इस संसार से बैगन को हटाना चाहता हूँ। मैं बैगन को इसलिए हटाना चाहता हूँ क्योंकि यह मुझे किसी प्रकार से पसन्द नहीं है।

अरण्या, पाँचवीं

मैं मेरी दोस्त को गायब करना चाहूँगी, क्योंकि वह थोड़ा घमण्ड करती है व बहुत गाली देती है। उसे मैं कुछ कहकर गायब करूँगी। अगर वह गायब नहीं होगी तो मैं पादकर गायब कर दूँगी। जहाँ मैं बैठती हूँ, वहाँ वह कभी-कभी पादती है तो वहाँ मेरे दोस्त बैठे रहते हैं, वह गायब हो जाते हैं। इसलिए उसके पास कोई ज़्यादा बैठता नहीं है। मैं भी यही प्रक्रिया अपनाकर अपनी दोस्त को गायब कर सकती हूँ।

प्रतिका, सातवीं

मैं टी.वी. को गायब करना चाहूँगा क्योंकि मेरी माँ टी.वी. देखती रहती हैं, मुझसे बात भी नहीं करतीं और मैं नाराज़ हो जाता हूँ।

अर्जुन, पाँचवीं

मैं मेरी साइकिल गायब करना चाहती हूँ क्योंकि वह पुरानी हो गई है। मैं उसे गायब करके नई साइकिल माँगूँगी।

सिद्धि, छठवीं

चित्र:
राम, तीसरी अपना स्कूल तातियागंज उत्तर प्रदेश

पेंग्विन के अण्डों की कुल्फी क्यों नहीं बन जाती

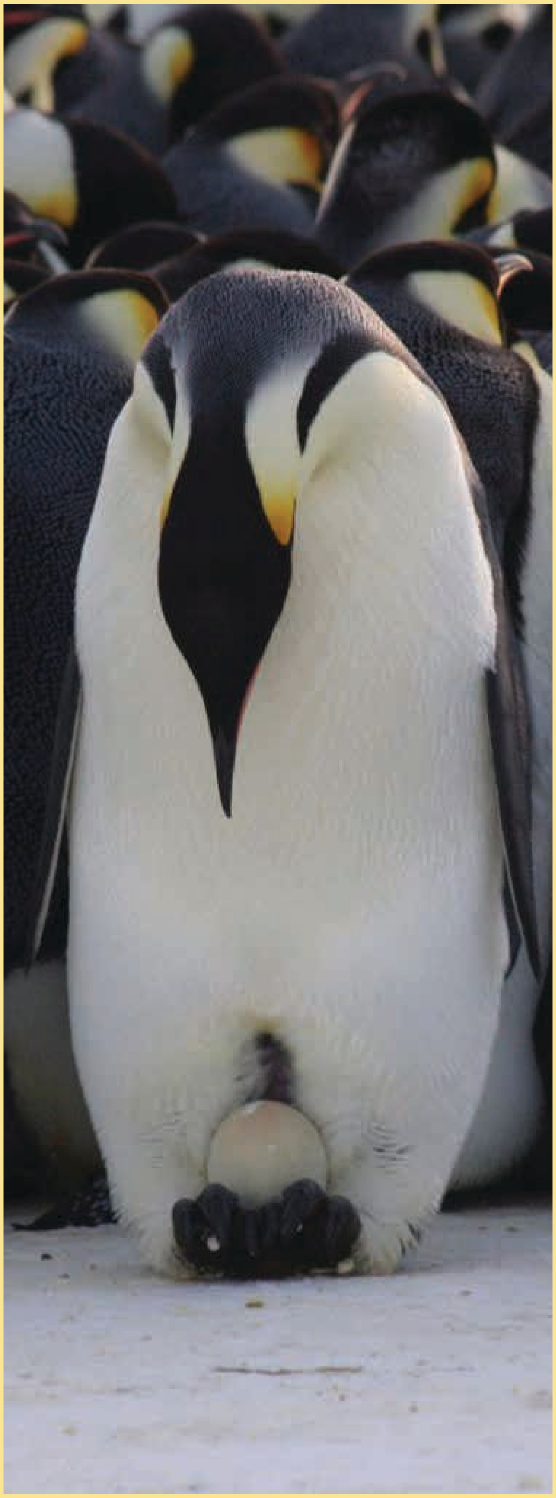

एम्परर पेंग्विन एक मशहूर पक्षी है जो अंटार्कटिक में पाया जाता है। और जैसे निहायत ठण्ड में रहने की सज़ा काफी न थी, एम्परर पेंग्विन अपने अण्डे जाड़े के मौसम में देते हैं। यहाँ ठण्ड इतनी होती है कि अण्डों की कुल्फी जम जानी चाहिए। मगर जमती नहीं, और अब वैज्ञानिकों ने बताया है कि ये पक्षी अपने अण्डों को कड़ाके की ठण्ड से कैसे बचा पाते हैं।

अन्य पेंग्विन्स ऐसे मौसम में अण्डे नहीं देते हैं। तो पहले यह देख लें कि इतनी कड़ाके की ठण्ड में अण्डे देने की क्या मजबूरी है? होता यह है कि जब ढेर सारे चूज़े अण्डे फोड़कर निकलते हैं तो उन्हें ढेर सारे भोजन की भी ज़रूरत होती है। इतना भोजन तो वसन्त में ही उपलब्ध होता है। यदि चूज़े वसन्त में निकालना है तो अण्डे जाड़ों में ही देने होंगे।

पेंग्विन हज़ारों की बस्ती में अण्डे देते हैं। हरेक मादा एक अण्डा देती है और फिर वह कई महीनों तक भोजन की तलाश में समुद्र की ओर निकल जाती है। अण्डों की देखभाल का काम नर पेंग्विन्स करते हैं। ऋणात्मक तापमान यानी कि ज़ीरो से भी कम तापमान में अण्डों को सम्भालने के लिए नर पेंग्विन वास्तव में गर्मी के स्रोत में तब्दील हो जाते हैं।

अन्य पक्षियों के समान पेंग्विन का शरीर भी पिच्छों (पंखों) से ढँका होता है। ये पिच्छ ऊष्मा के कुचालक होते हैं। यानी कि गर्मी इनके आर-पार नहीं जाएगी। इस कारण शरीर की गर्मी शरीर के भीतर रहती है। ये पिच्छ उनके शरीर को वातावरण की ठण्ड/गर्मी से अलग रखते हैं।

एम्परर पेंग्विन के पेट का एक हिस्सा होता है जो पिच्छों से ढँका नहीं होता। इसे शिशु थैली कहते हैं। पेंग्विन अण्डे को अपने दोनों पंजों पर टिकाकर इसी थैली से सटाकर रखते हैं और पेट के पिच्छों से उसे ढँक लेते हैं। इस प्रकार से अण्डा वातावरण की अतियों से महफ़ूज़ रहता है। और पिता के शरीर की गर्मी उसे मिलती रहती है।

पिता पेंग्विन एक काम और करते हैं। वे अपने शरीर की गर्मी को बचाने के लिए बर्फ से अपना सम्पर्क कम से कम कर देते हैं। इसके लिए वे अपने पंजों को ऊपर उठा लेते हैं और ऐड़ी के बल ज़मीन (यानी बर्फ) पर बैठते हैं। सन्तुलन बनाने के लिए अपनी पूँछ के सिरे की मदद लेते हैं। और इस पोज़ीशन में वे महीनों तक बैठे रहते हैं। नर पेंग्विन बड़े-बड़े झुण्ड में सटकर भी बैठते हैं। इन झुण्डों में ऊष्मा की हानि कम से कम होती है। जहाँ पेंग्विन के ऐसे जत्थे बैठते हैं वहाँ का तापमान आसपास के मुकाबले कई डिग्री अधिक होता है।

इन सब तरीकों के मिले-जुले इस्तेमाल की बदौलत ही पेंग्विन अपने अण्डों को सुरक्षित रखते हुए सेते हैं और अगली पीढ़ी को दुनिया में आने का मौका देते हैं।

स्रोत फीचर्स से साभार

दिवाली

रोहित नेमा
चित्र: प्रशान्त सोनी

वो आखिरी दफा शायद दिवाली में आया था। पटाखे चल रहे थे बाहर। उनकी रोशनी तो याद नहीं। हाँ, मगर आवाज़ याद है। रामू कहता है इस उमर में मैं सठिया गया हूँ। वो कहता है कि क्या ज़रूरी है कि वह दिवाली ही हो जब पिछली दफा वो आया था? आजकल तो लोग किसी भी बात पर बम-पटाखे चलाते रहते हैं। ये भी तो हो सकता है कि भारत-पाकिस्तान का मैच हुआ हो उस दिन? ठीक ही तो कहता है वो। उसकी तो आँखें हैं न, वो तो सच को साफ देख सकता है। और मैं? अरे मैं तो आवाज़ों से चीज़ों का आकार बनाता हूँ, और कौन-सा इतना उम्दा मिस्त्री हूँ कि चोखा ही ढाल दूँ। मेरी तो आँखें नहीं हैं, तो सच को कैसे देखूँगा!

बीते दिन हमारे घर से वो ताम्बे का लोटा भी चोरी हो गया। जो इकलौता बर्तन हमारे पास बचा हुआ था वो भी आखिर चला ही गया। क्या? क्या पूछते हो? बाकी के बर्तनों का क्या हुआ? अरे, वो तो एक-एक करके सारे चोरी हो गए। हर दिवाली कुछ न कुछ चोरी हो ही जाता है। पिछली दिवाली तो पिताजी का वो पैन भी चला गया जिसे मैं कभी अपने पॉकेट में डाल मास्टर बना करता था। रामू कहता है दिवाली नहीं थी वो! खैर, मेरे कानों ने ही फिर गलत तस्वीर रचाई होगी। रामू अच्छा आदमी है, घर के सारे काम तो कर ही देता है साथ ही मुझ अन्धे आदमी के नित्य-कर्म में भी मदद करता है। बचपन में गरीबी की मार बड़ी बुरी पड़ी है बेचारे पर, तभी न वज़न बढ़ा, न कद। मुश्किल से पचास किलो का होगा और लम्बाई कुछ पाँच फुट तीन इंच। क्या? मैं कैसे जानता हूँ ये? अरे बोला तो आवाज़ें लकीर खींच देती हैं! उसके पाँव जब फर्श पर पड़ते हैं तो साफ बताते हैं कि कैसे गरीबी ने चूस लिया उसको। भला आदमी बेचारा।

मेरे पास अब और कुछ बचा नहीं जिससे मैं उसकी और मदद कर सकूँ। हर दिवाली वो चोर कुछ न कुछ ले ही गया। कितना अजीब है, वो ठीक सामने वाले दरवाज़े से आता है और 1...2...3 कदमों के बाद धीरे-से दरवाज़ा बन्द कर देता है। जो भी हो, है बड़ा सज्जन। अपनी चप्पल ध्यान से बाहर ही निकाल देता है। फिर कुछ देर वहीं बाहर वाले कमरे में खड़ा हो घर का अन्दाज़ा लेता है, ठीक तब तक जब तक कि घड़ी 80 बार टिक-टिक न बोल दे। शायद उसे ठीक पता होता है कि इस दिवाली क्या चुराना है। तभी तो वह सीधे अन्दर वाले कमरे में पहुँचता है जहाँ से उसे अपनी पसन्द की चीज़ उठानी होती है, वो भी ठीक 14 कदम लेकर। पर पता नहीं क्यों वो जब सब बटोर लेता है तो बाहर वाले कमरे में आकर घड़ी की 130 टिक-टिक तक वहीं खड़ा रहता है! लेकिन भला मानुस है, दरवाज़े

पर कुण्डी लगाकर जाता है। शायद सोचता हो कि कोई जानवर न घुसकर धमाचौकड़ी मचाए घर में।

पिछली दफा उसके पैर में कुछ लगा था, तभी तो पैर घसीट के चल रहा था। बेचारा, भला मानुस। अरे रामू, दिवाली आने में तो अभी देर है ना? अच्छा, कल ही निकली है क्या? अगली दिवाली तक तो शायद ये शरीर साथ न दे पाएगा। अच्छा सुन, मेरे जाते-जाते पटाखे छोड़ देना। मैं उनकी आवाज़ सुनकर दिवाली मना लूँगा, हसीन रोशनियाँ, बेशुमार रोशनियाँ... तू आँखों से देख लेना और मैं कानों से चित्र खींच लूँगा। इस बार तो लोटा भी नहीं बचा। तो एक काम कर, ये चूल्हा ही ले जाना तू। और अपने पैर की पट्टी ज़रूर करा लेना। पर बाहर वाले कमरे में घड़ी की 130 टिक-टिक तक इस बार रुके मत रहना, कहते हैं आत्मा सब देख सकती है। शायद मर जाने के बाद मुझे भी आँखें आ जाएँ और मैं तुझे कमरे में खड़ा देख लूँ...!

गलतियाँ ढूँढो

इस चित्र में कुछ गलतियाँ हैं, क्या तुम उन्हें ढूँढ सकते हो ?

चित्र: शिवात्मिका लाला

मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

4 अप्रैल 1968 की शाम के छह बजे थे। काले (अफ्रीकी अमरीकी) सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का समर्थन करने मार्टिन लूथर किंग, जूनियर (एमएलके) कुछ दिनों से मेम्फिस शहर में थे। वे लॉरेन मोटल के दूसरे माले के एक कमरे की बालकनी में खड़े थे। तभी लगभग 60 मीटर की दूरी से एक बन्दूक चली और एमएलके गिर पड़े। एमएलके तब 39 साल के थे।

बीसवीं सदी में दूसरे महायुद्ध के बाद के दौर में भी अमरीका और खासकर उसके दक्षिणी राज्यों में अफ्रीकी-अमरीकी मूल के लोगों (जिनको नीग्रो कहा जाता था) की हालत काफी बुरी थी। देश के संविधान के मुताबिक नागरिकों के जो हक होते हैं, वे उनको नहीं दिए जाते थे। सत्रहवीं सदी में काले लोगों को गोरे लोगों ने अफ्रीका से अगवा कर अमरीका के ज़मींदारों के खेतों, बागानों और घरों में गुलामी करने के लिए ले जाना शुरू किया था। उन्नीसवीं सदी में गुलामी खतम हो जाने के बाद भी इन लोगों को गोरों से अलग रखा जाता था। इन्हें ज़्यादा वेतन वाली नौकरियों से बाहर रखा जाता था और मतदान भी नहीं करने दिया जाता था। इनके लिए होटल अलग, स्कूल-कॉलेज अलग, चर्च अलग, यहाँ तक की बस में सीटें भी अलग होती थीं। इस भेदभाव के खिलाफ वहाँ अनेक संघर्ष व आन्दोलन हुए।

काले लोगों को इज़्ज़त व हक दिलवाने के लिए एमएलके ने 1950 के दशक में संघर्ष करना शुरू किया। 35 वर्ष की उम्र में शान्ति का नोबेल पुरस्कार जीतने वाले एमएलके मूलतः एक पादरी थे। वे उस आन्दोलन के महत्वपूर्ण नेता थे जिसके कारण अमरीका में रंगभेद के खिलाफ एक व्यापक चेतना बनी और रंग, जाति, धर्म व लिंग के आधार पर लोगों को अलग रखने और उनके साथ अलग व्यवहार करने की परिपाटी पर कानूनी तौर पर रोक लगाई गई।

एमएलके अहिंसा में यकीन करते थे और महात्मा गांधी से काफी प्रभावित थे। फरवरी 1959 में वे भारत भी आए। लोगों से मिलकर उनको गांधी के विचारों की जीवन्तता का अन्दाज़ा लगा। लेकिन उन्होंने यह भी देखा कि भारत में भी भेदभाव हैं। अमरीका में रंग के आधार पर तो यहाँ जाति के आधार पर।

एमएलके कई लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। उनका 'आइ हैव अ ड्रीम' भाषण बहुत मशहूर है और आज भी लोग उसे सुन-पढ़कर हिम्मत लेते हैं। उसी भाषण का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है...

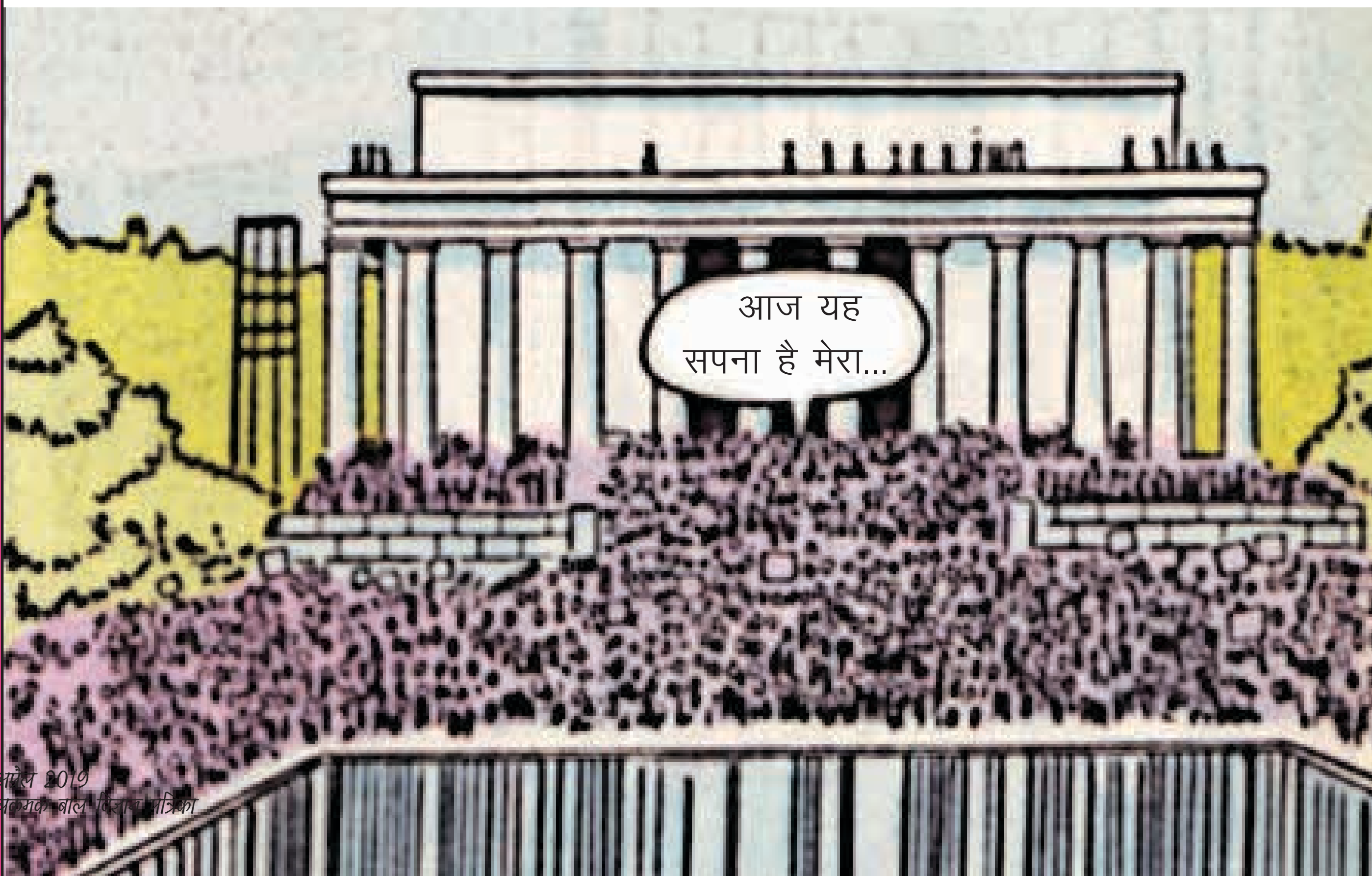

आज यह सपना है मेरा ...

चाहे हम तमाम मुश्किलों से क्यों न घिरे हुए हों दोस्तो, मैं यह कहना चाहूँगा मेरे पास फिर भी एक सपना है। इस सपने की जड़ें अमरीकी सपने में गहरे पैठी हुई हैं।

मेरा सपना है कि एक दिन यह देश जागेगा और अपने इस विश्वास पर सही मायने में अमल करेगा कि “हम मानते हैं कि यह सच्चाई बिलकुल साफ है कि हर इंसान जन्म से बराबर होता है।"1

मेरा सपना है कि एक दिन जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर गुज़रे ज़माने के गुलामों और मालिकों के बच्चे भाईचारे की मेज़ पर साथ-साथ बैठेंगे।

मेरा सपना है कि एक दिन मिसिसिपी जैसा प्रान्त, जो अन्याय और दमन की आग से धधक रहा है, वह प्रान्त आज़ादी और न्याय के नखलिस्तान में तब्दील हो जाएगा।

मेरा सपना है कि एक दिन क्रूर नस्लवादियों से भरे एलबामा में, जहाँ के गवर्नर के होंठों से "इंटरपोज़ीशन" और "निरस्तीकरण"(2) जैसे लफ्ज़ टपकते रहते हैं, एक दिन उसी एलबामा में नन्हे काले लड़के व काली लड़कियाँ भाई-बहनों की तरह नन्हे श्वेत लड़कों व श्वेत लड़कियों के हाथ में हाथ डाल सकेंगे। आज यह सपना है मेरा।

अनुवाद:
लोकेश मालती प्रकाश

1यह मशहूर वाक्य अमरीकी आज़ादी के घोषणापत्र में है जिसे थॉमस जेफरसन ने लिखा है।
2ये कानूनी शब्द हैं जिनका मतलब ऐसी कानूनी कार्यवाहियों से है जिनके ज़रिए अमरीका में कुछ राज्य सरकारें रंगभेद के खिलाफ केन्द्रीय सरकार की कार्यवाहियों को रोकने की कोशिश करती थीं।

एक पक्षी रिवर टर्न की कहानी

विवरण एवं चित्र:
श्रुति शर्मा एवं जितेश शेल्के

एक शाम हम एक तालाब के किनारे पक्षियों को देखने पहुँचे। कुछ पक्षी तालाब के किनारे तो कुछ तालाब के बीचोंबीच उड़ान भर रहे थे। एक पक्षी पानी पर उड़ान भर रहा था। उसकी चोंच पीली और पंख हल्का भूरा (gray) रंग लिए थे। उसकी पूँछ कटी हुई, कैंची जैसी थी और ऐसा लग रहा था मानो उसने सिर पर काले रंग की मखमल की टोपी पहन रखी हो।

अंग्रेज़ी में इसे 'रिवर टर्न' कहते हैं और हिन्दी में 'कुररी'। इसे पानी की सतह पर उड़ते हुए, मछली पकड़ते हुए देखा जा सकता है। ये साफ, ताज़े पानी के स्रोत जैसे कि नदी, तालाबों में पाई जाती है। ऐसे स्रोतों की तादाद अब कम होती जा रही है या फिर ये प्रदूषित होते जा रहे हैं। रिवर टर्न की संख्या भी काफी कम हो चुकी है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) के अनुसार इनके आवास खतम होने की वजह से इन पर विलुप्ति का खतरा मँडरा रहा है।

हम तालाब की पाल (किनारे) से पक्षियों की उड़ान देख रहे थे कि अचानक वो रिवर टर्न नीचे की ओर आया। एक बार तो हमें लगा कि वह हवा में कलाबाज़ी कर रहा है, लेकिन यह क्या! वह तो हमारे पास ज़मीन पर पत्थरों के बीच जा गिरा। हम यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि उसे हुआ क्या है? हमने उसे उठाया और उड़ाने की कोशिश की, मगर वह तो उड़ ही नहीं पा रहा था। उसे उल्टी हो रही थी और मुँह से कुछ निकल रहा था। साथ ही वह खूब बीट भी कर रहा था। हमने सोचा कि अगर इसे यहीं छोड़ दिया तो आसपास मौजूद कुत्ते वगैरह इसे मार डालेंगे। इसलिए हम उसे अपने घर ले आए।

तालाब से घर लगभग 8-9 किलोमीटर की दूरी पर है। इस बीच रिवर टर्न ने कुछ उल्टियाँ और कीं। घर पहुँचने के बाद भी उसे लगातार उल्टियाँ होती रहीं। वह मछलियाँ उगल रहा था। उसने सात-आठ मछलियाँ उगलीं। लगता है उसने खूब सारी मछलियाँ खा ली थीं और उसे अपच हो गई थी। उल्टियाँ करने के बाद उसे थोड़ी राहत महसूस हो रही थी। अब वह अपने पंख फड़फड़ाने लगा था। हमने उस पर एक घण्टे नज़र रखी और जब हमें एहसास हुआ कि वह अब ठीक हो गया है तो हम उसे वापस तालाब पर छोड़ आए। वह उड़कर हमसे दूर चला गया। हमें अच्छा लगा कि वह अब ठीक हो गया है।

सूखती हुई नदी और मुनिया

प्रकाश कान्त
चित्र: नीलेश गेहलोत

मुनिया का घर नदी के पास था। एक छोटे-से टीले पर। गाँव उस टीले पर था। मुनिया के घर के पीछे। उसका घर गाँव के सिरे पर था। टीले का उतार उसके घर के थोड़े-से आगे से शुरू होता था। उसी पर से उतरता हुआ कच्चा रास्ता नदी तक जाता था। बारिश में जब नदी में पानी बढ़ जाता तब आधा रास्ता पानी में डूब जाता था। पानी टीले के ऊपर तक तो नहीं आता फिर भी इतना आ जाता कि दरवाज़े में से नदी दिखाई देने लगती। वैसे नदी घर की छत से भी दिखाई देती थी। पूरी नहीं, थोड़ी-थोड़ी। पूरी नदी दादाजी उसे गोद में उठाकर दिखाते थे उसे देखकर अच्छा लगता। धूप में चमकती हुई नदी!

दादाजी अकसर शाम को उसे नदी तरफ घुमाने ले जाते थे। जब बिलकुल छोटी थी तब गोद में और बाद में उँगली पकड़कर। रास्ते में पेड़-पौधे, चिड़िया-कौए जो कुछ भी देखते उसके बारे में बताते चलते। चलते-चलते नदी आ जाती। नदी पर कोई घाट नहीं था। किनारे पर कुछेक पत्थर ज़रूर पड़े थे। दादाजी उसी में से किसी बड़े पत्थर पर बैठ जाते, उसे भी पास बिठा लेते। कभी-कभी घर से मुनिया के लिए खाने-पीने की चीज़ों के साथ-साथ चने, दाने जैसी चीज़ें भी ले आते मछलियों के लिए! नदी में मछलियाँ थीं। छोटी-बड़ी अलग-अलग तरह की। बहुत सारी। नदी में चने, दाने डालने पर बहुत सारी इकट्ठी हो जातीं। शुरू

में उतनी सारी मछलियाँ एक साथ देखकर मुनिया थोड़ा-सा डरती थी। बाद में डर कम और फिर खतम हो गया। वह किनारे पर खड़ी मछलियों को दानों पर झपटते और फिर दाने खतम होने पर लौट जाते देखती रहती।

"दादाजी, मछलियाँ पानी में डूबती नहीं?" पूछती।

"नहीं बेटा, नदी तो उनका घर है। वे अपने इस घर में मज़े से रहती हैं।" दादाजी समझाते।

नदी का घर! सुनकर मुनिया को अच्छा लगता।

"इस घर में क्या सिर्फ मछलियाँ ही रहती हैं?"

"नहीं, मेंढक, कछुए भी रहते हैं। बड़ी नदी में तो मगर भी रहते हैं। नदी इन सबका घर है। फर्क सिर्फ इतना है कि मछलियाँ अपने इस घर से कभी बाहर नहीं निकलतीं, जबकि मेंढक, कछुए वगैरह निकलते हैं। निकलकर ज़मीन पर घूमते-फिरते हैं। मछलियाँ अपने घर में ही घूमा करती हैं।"

दादाजी की बात सुनकर मुनिया नदी को देखने लगती। फिर सोचने लगती घर आने तक। सोचते-सोचते सो भी जाती। एकाध बार उसने सपना देखा कि वह नदी के अन्दर है। बिलकुल पानी के अन्दर! मेंढक, कछुए उसके आसपास हैं। मछलियाँ भीं। बहुत सारी। छोटी-बड़ी। चमकदार। उसके पास। दाने-चने देते रहने से उसे पहचान रही हैं। उसे देखकर खुश हो रही हैं। हँस रही हैं। उन्हें हँसता देख वह भी हँस रही है।

"तुम रात को नींद में हँस रही थीं!" सवेरे उठने पर माँ ने कहा था।

"मम्मी, सपने में एक मछली मेरा गाल सहला रही थी!"

"सपने में!"

"हाँ, सपने में!" मम्मी मुस्करा दीं।

शाम को जब वह दादाजी के साथ नदी पर गई तो उस मछली को ढूँढती रही जो रात को सपने में उसका गाल सहला रही थी। उस मछली को ढूँढने के लिए उसने अपने साथ लाए दाने भी नदी में डाले। हमेशा की तरह कई मछलियाँ आईं लेकिन उनमें उसे सपने वाली मछली नहीं दिखाई दी। उस मछली का उसे नाम नहीं पता था। पता होता तो नाम लेकर पुकारती।

जब तक दाने वह नदी में डालती रही, मछलियाँ भी जुटी रहीं। दाने खतम होते ही मछलियाँ चली गईं। सब। मुनिया कुछ देर खड़ी रही। चुप। थोड़ी-सी उदास।

"सपने वाली मछली नहीं मिली न?" दादाजी ने पूछा। मुनिया ने गर्दन हिलाई।

"किसी दिन मिल जाएगी। वही तुम्हें पहचानकर आवाज़ देगी।"

"सच्ची!"

"हाँ, बिलकुल सच्ची!"

"लेकिन, उसे मेरा नाम कैसे मालूम?"

"मैंने बताया था। कल मेरे सपने में आकर पूछा था, मैंने बता दिया।"

"तब तो ठीक है!" उसे अच्छा लगा। वह खुश हो गई। वह रोज़ शाम को नदी के पास जाने पर इन्तज़ार करती। मछली का और अपना नाम पुकारे जाने का।

कई दिन हो गए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

"तुम उसी मछली का इन्तज़ार कर रही हो! लेकिन वह तो अभी अपने मामा के घर गई हुई है।" दादाजी ने बताया।

“आपको कैसे मालूम?”

“उसी मछली ने कल सपने में आकर मुझे बताया।”

“मुझे क्यों नहीं बताया!”

“पहले वह तुम्हें ही बताने तुम्हारे सपने में गई थी। लेकिन, तब तुम एक परी के साथ घूमने बादलों के पार कहीं गई हुई थीं। तितली ने उसे यह बताया था। सो, मुझे बताकर गई।”

“लेकिन मैं परी के साथ गई ही नहीं थी।”

“हो सकता है कि उस तितली को गलत जानकारी रही हो! तितली मिले तो तुम उसे इस बात के लिए डाँटना और सख्ती से कह देना कि आगे से वह ऐसी गलती न करे!”

“उस मछली के मामा कहाँ रहते हैं?”

“अपनी इसी नदी में आगे बहुत दूर! जैसे तुम्हारे मामा का घर दूर है न बस वैसे ही उतनी दूर!”

मुनिया उदास हो गई। वह अपनी तस्वीरों वाली किताब उलटने-पलटने लगी। वह किताब उसके मामा ने उसे उसके जन्मदिन पर दी थी। किताब में चिड़िया थी। तितली थी। गिलहरी भी थी। इनके बारे में एक कहानी भी थी। मुनिया को अभी ज़्यादा पढ़ना नहीं आता था। बहुत छोटी क्लास में थी न इसलिए थोड़ा-थोड़ा पढ़ पाती थी। धीरे-धीरे। अटकते-अटकते। ऐसे में दादाजी ही उसे उसकी किताबों से कहानी-कविता पढ़कर सुनाया करते थे। वह दादाजी की बगल में उनसे बिलकुल सटकर बैठ जाती। वे पढ़ते जाते। वह सुनती और किताब में बने चित्र देखती रहती। बीच-बीच में दादाजी कुछ समझाते भी रहते। कभी-कभी वह खुद भी कुछ पूछ लेती।

उसके पास बहुत सारी किताबें थीं। रंगीन। चित्रों वाली। कुछ में तो सिर्फ चित्र ही थे। सिर्फ चित्रों की किताब। शेर, हाथी, ऊँट, जिराफ। तोता, चिड़िया, चील, मोर। बदक, खरगोश, मगर, मेंढक। वह किताब खोलकर उन्हें देखती रहती। देर तक देखती फिर रख देती। फिर सो जाती। ज़्यादातर किताबें उसके मामा ने दी थीं। जब भी आते, उसके लिए खिलौने, खाने की चीज़ों के अलावा किताबें ज़रूर लाते। कुछ किताबें उसके मम्मी, पापा और दादाजी भी लाए थे। इस तरह खिलौनों की ही तरह उसके पास बहुत सारी किताबें भी जमा हो गई थीं। उसके अड़ोस-पड़ोस के उसके दोस्त भी कभी-कभी उसके खिलौनों से खेलने के अलावा किताबें देखने-पढ़ने आ जाते थे। तब उसकी मम्मी उन सबको खाने को कुछ न कुछ देती थी। कभी-कभी दादाजी भी उनमें शामिल हो जाते। खेल खिलाते। गीत, कविता, कहानी सुनाते। बन्दर, भालू, खरगोश, लोमड़ी वगैरह की। मुनिया और उसके दोस्तों को मज़ा आता।

दादाजी कभी-कभी नदी की भी कहानी सुनाते। कहानी सुनाते-सुनाते अपने गाँव की नदी के बारे में बताने लगते। वे बताते थे कि कभी उस नदी में बहुत सारा पानी होता था। साल भर नदी पानी से भरी रहती थी। लबालब। नदी में नाव चलती थी। नाव से ही लोग नदी के उस तरफ के गाँव जाना-आना करते थे। अब ऐसा नहीं होता क्योंकि एक तो नदी में बारिश के अलावा पानी कम रहता है। दूसरे, नदी पर एक छोटा-सा पुल बन गया है। लोग उसी पर से जाते-आते थे। दादाजी ने बताया था कि नदी को जहाँ-जहाँ से पानी मिलता था, वहाँ से मिलना कम होता जा रहा है। अगर पानी मिलना ऐसे ही कम होता रहा तो किसी दिन नदी सूख जाएगी।

जब दादाजी ने यह सब बताया मुनिया उनके साथ नदी पर ही थी।

“क्या सच में नदी सूख जाएगी? मुनिया ने नदी की ओर देखते हुए पूछा।

“हाँ बेटा, अगर ठीक से ध्यान नहीं दिया गया न तो किसी दिन ज़रूर सूख जाएगी!”

“तब नदी के मेंढक, कछुए कहाँ जाएँगे?”

“वे अपने रहने की कोई दूसरी जगह ढूँढेंगे।”

“और मछलियाँ कहाँ जाएँगी?”

“वे कहीं नहीं जा पाएँगी। धीर-धीरे मर जाएँगी।”

“सब मर जाएँगी?”

पेज 33 पर जारी

ये भिनभिनाहट क्या है?

एक अनोखी कुरियर सर्विस

मधुमक्खियाँ भोजन - पराग (pollen) व मकरन्द (nectar) - के लिए फूलों पर मँडराती हैं और अपने छत्ते पर इन्हें ले जाती हैं। जब वो भोजन की तलाश में एक फूल से दूसरे फूल पर जाती हैं तो एक फूल के परागकणों को दूसरे फूलों तक पहुँचाती हैं - किसी कुरियर सर्विस की तरह। कुछ किस्म के पौधों के फूल केवल ऐसा होने पर ही फल के रूप में विकसित हो पाते हैं।

यदि यह व्यस्त कीट ना हों तो शायद हमें बहुत से ऐसे फल और सब्ज़ियाँ नहीं मिल पाएँ जिन्हें हम खाते हैं। इनमें पत्तागोभी, भिण्डी, मिर्ची, नारियल, नीम्बू, तरबूज, सेब और आम शामिल हैं। क्या तुम ऐसे कुछ अन्य जानवरों के बारे में सोच सकते हो जो पौधों को इस तरह की कुरियर सर्विस देते हैं?

दुनिया के पुराने वासी

मधुमक्खियाँ पृथ्वी पर लाखों वर्षों से भिनभिना रही हैं। यह कई प्रकार की होती हैं जैसे, बढ़ई मधुमक्खियाँ, मिस्त्री मधुमक्खियाँ, खनन मधुमक्खियाँ, भौंरें, शहद मधुमक्खियाँ, पसीना मधुमक्खियाँ, डंकहीन मधुमक्खियाँ। केवल भारत में ही 750 से अधिक विभिन्न प्रकार की मधुमक्खियाँ पाई जाती हैं।

भौंरा

मिस्त्री मधुमक्खी

बढ़ई मधुमक्खी

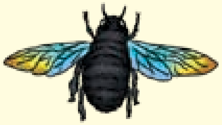

शहद बनाने वाली मधुमक्खियों का छत्ता (एपिस फ्लोरिया)

खनन मधुमक्खी

एपिस फ्लोरिया

पसीना मधुमक्खियाँ

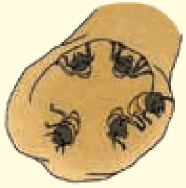

अपने छत्ते के प्रवेश द्वार की रक्षा करतीं डंकहीन मधुमक्खियाँ

nature conservation foundation
science for conservation

फील्ड डायरी के लिए

मधुमक्खियों को ढूँढने का एक तरीका है फूलों पर नज़र रखना। मधुमक्खियों को देखने का सबसे अच्छा समय है जब सूरज निकल चुका हो और हल्की-सी गर्मी हो। तो अपने घर के आसपास के फूलों वाले पौधों को ढूँढो। उनसे आधे मीटर दूर बैठकर देखो क्या-क्या होता है। 15 मिनट इन्तज़ार करो।

तुमने फूल पर कितने कीटों को आते हुए देखा?

क्या फूलों पर आने वाले इन कीटों में तुम्हें कोई मधुमक्खियाँ भी दिखाई दीं?

वो किस आकार की थीं, उनके रंग पैटर्न क्या थे?

क्या तुम मधुमक्खियों व अन्य कीटों के शरीर पर चिपकी पाउडर जैसी कोई पीली चीज़ देख पाए?

यदि तुम्हें अपने फूलों पर कोई कीट आते हुए ना दिखें तो किसी अलग प्रकार के पौधे पर किसी और रंग के फूल को ढूँढो। किस तरह के पौधों के प्रति कीट ज़्यादा आकर्षित होते हैं? अपने अनुभव हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो।

छत्ते के अन्दर

फूलों का मकरन्द (जो एक मीठा रस होता है) चूसने के बाद, अधिकांश मधुमक्खियाँ इसे अपने छत्ते में ले जाती हैं। मकरन्द को वे अपने शहद वाले पेट में ले जाती हैं, जो कि भोजन के पेट से अलग होता है। छत्ते में वापस पहुँचकर मधुमक्खी मकरन्द को मुँह के ज़रिए दूसरी मधुमक्खी को दे देती है और दूसरी मधुमक्खी तीसरी को... और इस प्रकार मकरन्द कई मधुमक्खियों के मुँह से गुज़रता है। हर मधुमक्खी थोड़ी देर के लिए इस मकरन्द को चबाती है। इसी तरह शहद बनता है। फिर इस शहद को छत्ते के छेदों में इकट्ठा करके रखा जाता है। सीलबन्द करने के पहले मधुमक्खियाँ अपने पंखों से हवा करके इसे सुखाती हैं।

प्रतियोगिता

एक आसान-सा प्रयोग करो। एक चम्मच पानी में दो चम्मच चीनी घोलो। चीनी के इस घोल को एक छोटी-सी थाली या किसी बोतल के उथले लेकिन चौड़े ढक्कन में डाल लो। थाली की तली में रुई का एक टुकड़ा रखो और ध्यान दो कि चीनी के घोल का स्तर रुई के टुकड़े से बहुत ऊपर ना हो। अब इसमें नीम्बू या पुदीने के रस की एक या दो बूँदें डालो। ऐसी एक-दो थालियाँ अपने बगीचे या बालकनी में रखो। यदि सम्भव हो तो इन्हें फूलों के बीच में रखो।

दिन में कई बार अपनी थालियों का अवलोकन करो खासतौर से तब जब सूरज चमक रहा हो और गर्मी हो। अपनी थालियों पर आनेवाले सभी कीटों का एक रिकॉर्ड रखो। अपने इन मेहमानों के और खासतौर पर मधुमक्खियों के चित्र या वीडियो हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और भारतीय जानवरों पर एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद : कविता तिवारी

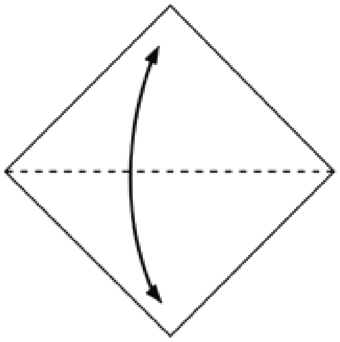

एक चौकोर कागज़ लो और उसे तिरछा रख आधे में मोड़ो। उसे फिर खोल लो।।

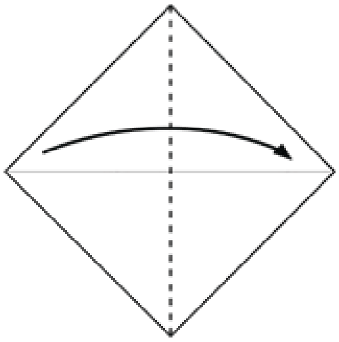

अब दूसरे कोने से भी इसी तरह मोड़ो।।

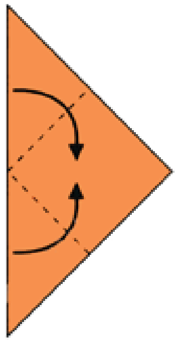

बीच में खींची लाइन में दोनों किनारों को मिलाओ।

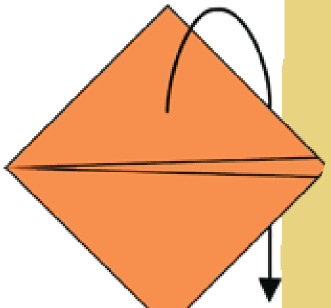

अब जो बीच की लाइन है उससे आधे में मोड़ लो।।

तुम भी बनाओ

लोमड़ी

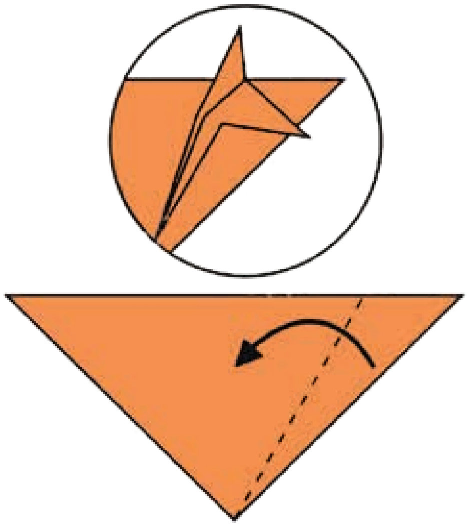

कोने में जो सबसे पहली पत्ती है उसे उठाओ। फिर बीच की जो पत्ती है उसे चित्र में दिखाए तरीके से चपटा कर दो।।

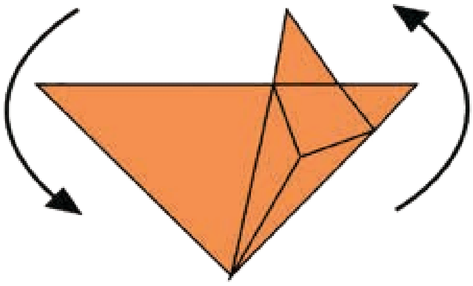

चित्र में दिखाए गए तरीके से अपने बनाए हुए आकार को सीधा कर दो।।

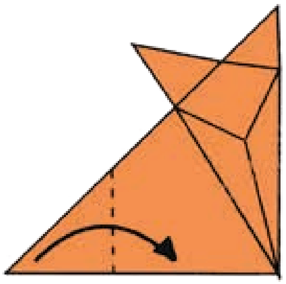

दूसरे कोने को हल्का-सा मोड़ दो।।

पेंसिल या स्केच पैन से आँखें और नाक बना लो और हो गई तैयार तुम्हारी लोमड़ी।

उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: शिवात्मिका लाला

भाग - 2

गोपी गवैया बाघा बजैया

काफी हँस लेने के बाद गोपी बोला, "भाई, जैसे मैं हूँ एक गवैया, वैसे ही तुम हो एक बजैया! अगर हम दोनों मिल जाएँ तो ज़रूर कुछ न कुछ कर पाएँगे!"

इस बात से बाघा भी बिलकुल सहमत था। थोड़ी देर बातचीत करने के बाद उन्होंने तय किया कि वे दोनों मिलकर महाराज को गाना सुनाने जाएँगे। इससे महाराज को बड़ी खुशी मिलेगी, इसमें तो कोई शक नहीं, ऐसा भी हो सकता है कि वे अपना आधा राज्य उनको दे दें और अपनी बेटी के साथ शादी भी करवा दें।

मन ही मन गोपी और बाघा यह सोचकर खुशी से फूले न समा रहे थे कि वे महाराज को गाना सुनाने जा रहे हैं। दोनों हँसते-हँसते और नाचते-नाचते एक बहुत बड़ी नदी के तट पर आ पहुँचे। राजबाड़ी जाने के लिए इस नदी को पार करना पड़ता है।

नदी में नाव है, पर नाविक पैसे लेकर ही नाव पर चढ़ने देता है। बेचारे जंगल से आए, पैसे कहाँ उनके पास! उन्होंने कहा, "भाई, हमारे पास पैसा-वैसा तो नहीं है, पर हम तुम्हें गाना-बजाना सुनाएँगे, हमें उस पार ले चलो।" इस पर नाव की दूसरी सवारियों ने बहुत खुश होकर नाविक से कहा, "हम लोग चन्दा इकट्ठा कर इनका किराया दे देंगे, तुम इन्हें चढ़ा लो।"

बाघा का ढोल देखकर नाविक को भी संगीत सुनने की बड़ी इच्छा हो रही थी, इसलिए उसने इस बात का कोई विरोध नहीं किया। गोपी और बाघा के चढ़ने पर नाव चल पड़ी। नाव लोगों से भरी हुई थी, उसमें बैठकर बजाने की जगह कहाँ होती! बड़ी मुश्किल से सबके बीच ज़रा-सी जगह मिली, तब तक नाव भी मझधार में पहुँच चुकी थी। फिर ज़रा-सा गुनगुनाकर गोपी ने गाना शुरू किया, बाघा ने ढोल पर छड़ी मारी, बस तुरन्त ही नाव पर बैठे सभी लोग घबराकर लोटपोट होने लगे और एक-दूसरे को थामने की कोशिश में उनसे नाव ही उलट गई।

यह तो बड़ी भारी विपदा आ गई। अच्छी बात यह थी कि बाघा का ढोल काफी बड़ा था, उसी को कसकर पकड़े रहकर दोनों ने जान बचाई। पर राजबाड़ी वे नहीं जा पाए।

दिन भर नदी की धार में बहते-बहते शाम हो गई, तब जाकर वे तट पर एक बहुत बड़े जंगल में पहुँच पाए। उस जंगल में दिन के वक्त ही जाने पर डर से जान निकल जाती है, रात की तो बात ही मत पूछो। तब बाघा बोला, "गोपी भैया, यह तो बड़ी मुसीबत में फँस गए, अब बतलाओ क्या करें! "गोपी बोला, "करें क्या? मैं गाऊँगा, तुम बजाओगे। अगर शेर ने खाना है ही, तो उसे अपनी विद्या भी दिखला तो दें?"

बाघा बोला, "ठीक है भैया! मरना ही है तो उस्तादों जैसे मरें, गाँव के भूतों जैसा मरना ठीक नहीं है।"

यह कहकर दोनों ने अपने गीले कपड़े पहने ही जी खोलकर गाना-बजाना शुरू कर दिया। चूँकि उस दिन बाघा का ढोल गीला था, इसीलिए उसमें से गहरी-सी आवाज़ निकल रही थी। और गोपी भी यही सोच रहा था कि यह उसका आखिरी गीत है, इसलिए उसके गले की आवाज़ भी काफी भारी निकल रही थी। अरे, वह भी कैसा ज़बरदस्त संगीत था, क्या बतलाएँ! एक घण्टा-दो घण्टे होते-होते आधी रात बीत गई, पर उनका गाना रुका नहीं।

अचानक उन दोनों को लगा, जैसे चारों ओर कुछ अजीब-सा हो रहा हो। पेड़ के ऊपर से हल्के-हल्के से, काले-काले से, बड़े-बड़े न जाने कौन झाँकने लगे थे। उनकी आँखें जल रही थीं, जैसे आग की भट्टियाँ हों, दाँत ऐसे निकले हुए थे जैसे सूखी मूलियाँ हों।

यह देखकर तुरन्त अपने आप ही बाघा का बजाना रुक गया, साथ ही दोनों के हाथ-मुँह सिकुड़ गए, पीठ टेढ़ी हो गई, गर्दनें झुक गईं, आँखें निकल आईं और मुँह खुले के खुले रह गए। उनके शरीर इतनी बुरी तरह काँपने लगे और दाँत इस तरह किटकिटाने लगे कि उन्हें दौड़कर भागने की भी सुध न रही।

पर भूतों ने उनका कुछ न बिगाड़ा। वे उनका गाना-बजाना सुनकर बहुत खुश थे और उनको बुलाने आए थे कि उनके राजा के बेटे की शादी में गोपी और बाघा आएँ। संगीत रुकता देखकर उन्होंने नाक से आवाज़ निकालते हुए कहा, "रुक क्यों गए बाप? बजा, बजा, बजा!"

इस बात से गोपी और बाघा की हिम्मत ज़रा बढ़ी, उन्होंने सोचा, "यह तो बढ़िया रही, ज़रा गाकर ही देखें।" ऐसा कहकर ज्यों ही उन लोगों ने फिर गाना शुरू किया, तुरन्त भूतबन्धु एक-एक, दो-दो कर पेड़ से उतरकर उनके चारों ओर नाचने लगे।

अरे, वह भी कैसी मस्ती थी, जिसने नहीं देखा, वह क्या समझे! अपनी पूरी ज़िन्दगी में गोपी और बाघा ने ऐसे पारखी नहीं देखे थे। वह रात इसी तरह बीत चली। जब भोर होने को आई तो भूत तो बाहर नहीं रह सकते, इसलिए उससे ज़रा-सा पहले उन्होंने कहा, "चलो भाई, हमारे सरदार के बेटे की शादी में चलो! तुम्हें खुश कर देंगे।"

गोपी बोला, "पर हमें तो राजबाड़ी जाना है!" भूत बोले, "अरे चले जाना, पहले हमारे घर भी ज़रा गाना-बजाना सुना जाओ! तुम लोगों को खुश कर देंगे।" आखिर वे दोनों ढोल लेकर भूतों के घर चले। वहाँ जो गाना-बजाना हुआ, उसके बारे में कुछ कहने की ज़रुरत नहीं है। उसके बाद उनको विदा करते वक्त भूतों ने कहा "तुम लोग क्या चाहते हो?"

गोपी बोला, "हम यह चाहते हैं कि हम गा-बजाकर सबको खुश कर सकें।"

भूतों ने कहा, "ऐसा ही होगा, जो भी तुम लोगों का गाना-बजाना सुनेगा, संगीत खतम होने के पहले कोई उठकर नहीं जाएगा। और क्या चाहते हो?"

गोपी बोला, "और इतना ही चाहते हैं कि हमें खाने-पहनने में कोई कमी न हो।" यह सुनकर भूतों ने उन्हें एक थैला दिया और कहा, "जब भी तुम जो कुछ खाना चाहो या पहनना चाहो, इस थैले में हाथ डालते ही वह तुम्हें मिल जाएगा। और क्या चाहते हो?"

गोपी बोला, "और क्या चाहें वह तो हमारी समझ में नहीं आ रहा!" तब भूतों ने हँसते-हँसते उन दोनों को दो जोड़े जूते ला दिए और कहा, "इन जूतों को पैरों में पहनकर तुम लोग जहाँ भी जाना चाहोगे, तुरन्त पहुँच जाओगे।"

तो अब परेशानी की बात ही क्या रही। गोपी और बाघा ने भूतों से विदा ली, पैरों में वे जूते पहन लिए और कहा, "तो अब हम राजबाड़ी जाएँगे!"

जारी...

क्यों क्यों?

चित्र: सकीना, तीसरी, अपना स्कूल, तातियागंज, उत्तर प्रदेश

●●●●●●●●●●

मैं हमारे मुर्गे को गायब करना चाहता हूँ क्योंकि वह रात में हमेशा चिल्लाता है। एक दिन मैं उसे गायब करूँगा, मतलब करूँगा।

अनिल, दूसरी

●●●●●●●●●●

मैं टेस्ट पेपर को गायब करूँगा क्योंकि एग्ज़ाम की वजह से माता-पिता अपने बच्चों के ऊपर दबाव डालते हैं।

राजवीर, पाँचवीं

●●●●●●●●●●

मैं पड़ोसी के कुत्ते को गायब करना चाहती हूँ। मैं जब सुबह रिक्शे से स्कूल के लिए निकलती हूँ तो वह मुझ पर भौंकता है। और जब मैं शाम को मैदान में खेलने के लिए जाती हूँ तब भी मुझे तंग करता है। इसलिए मैं उसे सुबह और शाम थोड़ी देर के लिए गायब करना चाहती हूँ।

सोनल, तीसरी

●●●●●●●●●●

मैं झगड़ा-लड़ाई को गायब करना चाहती हूँ, क्योंकि किसी के घर में झगड़ा-लड़ाई, मार-काट होती है तो बहुत डर लगता है। दिल में अजीब-अजीब से विचार आते हैं। घबराहट होती है, जिससे कई लोगों की सूसू निकल आती है। साथ में कई लोगों की तबियत खराब हो जाती है, जिससे घर में बच्चे या किसी बड़े लोगों की आवाज़ नहीं गूँजती। उसके कारण घर का व्यवहार बदल जाता है, बच्चे कहानी नहीं सुन पाते।

शिवानी, सातवीं

●●●●●●●●●●

हम दीदी को कमरे में बन्द कर देंगे क्योंकि वो हमको पढ़ाती हैं।

पूजा, चौथी

●●●●●●●●●●

यदि मैं किसी चीज़ को गायब करना चाहूँगी तो वह होगी रंगों का भेदभाव। गोरा होना ही खूबसूरती नहीं है।

सान्वी, पाँचवीं

●●●●●●●●●●

मैं शराब को गायब करूँगा क्योंकि लोग शराब पीते हैं तो पागल हो जाते हैं। किडनी खराब हो जाती है और लीवर भी खराब हो जाता है।

दिव्य, पाँचवीं

●●●●●●●●●●

मैं कमलेश सर को गायब करना चाहती हूँ क्योंकि वो हमें डाँटते हैं।।

शीला, पहली

●●●●●●●●●●

हमारे घर के सामने पेड़ है। उस पेड़ के फूलों की बू से हमें साँस लेने में तकलीफ होती है, इसलिए मैं वह पेड़ गायब करना चाहती हूँ।

नयन, दूसरी

मैं फौजियों और देशभक्तों को गायब करना चाहूँगा ताकि जब कोई देशभक्त सामने होता है तो देशद्रोहियों के संगठन उसे मार डालते हैं। अगर देशभक्त गायब रहेंगे तो वे देशद्रोहियों और आतंकवादियों को सबक सिखा सकेंगे। लड़ते-लड़ते हज़ारों फौजी शहीद हो जाते हैं, अगर आतंकवादी को कोई दिखेगा ही नहीं तो वे मारेंगे किसे? इससे फौजियों और करोड़ों देशभक्तों की मृत्यु नहीं होगी, जिससे उनमें और गुस्सा बढ़ेगा, उनके सामने मुश्किलें अधिक रहेंगी जिसका फायदा फौजी देशभक्त उठाएँगे। गायब होने से वह आतंकवादी उन्हें देख नहीं सकेंगे तो लड़ेंगे कैसे एवं फौजी उन्हें मारकर दुनिया के गद्दारों का अन्त करेंगे। हमारा देश सुख, शान्ति से जिएगा और अगर कोई हमारे देश पर बुरी नज़र डालेगा तो गायब देशभक्त उन्हें मार डालेंगे।

विवेक, सातवीं

मेरे बस्ते का बहुत बोझ होता है। अगर मेरे पास जादुई शक्ति होती तो मेरे बस्ते को ही मैं गायब कर देती।

श्रेया, दूसरी

मैं इंजेक्शन को गायब करूँगी क्योंकि मैं जब-जब बीमार होती हूँ तब मेरे माता-पिता अस्पताल में ले जाते हैं, तो डॉक्टर मुझे इंजेक्शन देते हैं। डॉक्टर जब मुझे इंजेक्शन हाथ में चुभाते हैं तो मुझे बहुत दर्द होता है।

मानसी, चौथी

अगर मैं किसी गायब कर सकूँ तो मैं खुद ही गायब हो जाऊँगा। क्योंकि जो लोग मुझे तंग करते हैं, उन्हें मैं तंग करूँ और मैं दूसरों की बातें सुनूँ और मैं जो मन चाहे वो कर सकूँ। इसलिए मैं खुद ही गायब होना चाहता हूँ।

जयेश, आठवीं

अगर हम किसी को गायब करते हैं तो उसके लिए शक्ति चाहिए और गायब करने के लिए हमारे पास दिमाग होना चाहिए। अगर मैं गायब करती तो मैं किसी को भी गायब कर देती। मैं अपने भाई को गायब करती क्योंकि वो पढ़ने में ठीक है।

शोभा, सातवीं

चित्र: जूली, पाँचवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, उत्तर प्रदेश

अमलतास और विशु

गीता रामस्वामी और सुहेल कादर

केरल की दसवीं क्लास में पढ़ने वाली सयाना साबू अपने घर के एक पेड़ से काफी हैरान थी। पिछले तीन सालों से वह उस पेड़ का अवलोकन कर रही थी। यह अमलतास (*Cassia fistula*) का पेड़ था जिससे उसे उम्मीद थी कि हर साल 14-15 अप्रैल को विशु के त्योहार तक वह पूरी तरह से खिल उठेगा। लेकिन इस पेड़ पर तो विशु के अलावा साल के अन्य महीनों में भी फूल दिखते! यह अजीब था। एक ज़माना था जब पूरे इलाके को अमलतास के फूलों से पीला रंगा हुआ देखते, तो पता चलता कि विशु है। तो अब ये क्या हो रहा था?

दक्षिण भारत में तापमान में उतार-चढ़ाव उत्तरी शीतोष्ण इलाकों में होने वाले बदलावों की तुलना में कम हैं। इसीलिए पाठ्यपुस्तकों में दिए गए मौसम - गर्मी, सर्दी, पतझड़ और बहार - यहाँ लागू नहीं होते हैं। लेकिन ज़्यादातर पेड़ मौसमी ज़रूर होते हैं, जो साल के कुछ खास समय में ही फूलते-फलते हैं। तापमान, दिन की लम्बाई और नमी के आधार पर इन्हें समय के बीतने का एहसास हो जाता है। और इसके चलते पेड़ से पुराने पत्ते गिरते हैं, हरे पत्ते और कलियाँ खिलती हैं, फल पकते हैं।

हमारे देश में गर्मी का संकेत उन पेड़ों के चमकते हुए रंगीन फूल हैं, जिन पेड़ों ने सर्दियों के सूखे ठण्डे महीनों दिसम्बर, जनवरी और फरवरी में अपने पत्ते खो दिए थे। पलाश, इण्डियन कॉरल ट्री, सेमल सभी नंगे पेड़ जैसे लाल-नारंगी पोशाक पहन लेते हैं। उसके कुछ ही हफ्तों बाद ये गहरे हरे रंग में बदल जाते हैं। फिर जामुन और आम के फल हमें बताते हैं कि गर्मी आ ही गई है। दूर-दूर तक धरती का हरा हो जाना – घास से भरा हुआ, छोटे-छोटे शाक और पेड़ों के अंकुर जो कुछ ही दिनों के मेहमान हैं बतलाते हैं कि वाकई आ गया मानसून।

केरल में अमलतास के फूल विशु के त्योहार में इस्तेमाल होते हैं और वहाँ की स्थायी संस्कृति का एक अटूट हिस्सा हैं। अकसर इसके नंगे पेड़ जब खिल उठते हैं, उनके लटकते हुए सुनहरे-पीले फानूस जैसे फूल दूर से पहचान में आ जाते हैं। लेकिन केरलवासी पिछले कुछ सालों से देख रहे हैं कि अमलतास साल में अप्रैल के महीने के अलावा भी खिलता है। यह चिन्ता का कारण हो सकता है। क्या पेड़ों को अपने पर्यावरण से कुछ मिले-जुले संकेत मिल रहे हैं? क्या ये जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे अनियमित मानसून और बढ़ते तापमान का नतीजा है।

पहले हमें अमलतास के खिलने के पैटर्न को समझना होगा। इसके लिए हमें बहुत सारे पेड़ों का लम्बे समय तक अवलोकन करना होगा। इसी तरह तो हम यह पता कर पाएँगे कि साल में कब अमलतास पूरी तरह खिलते हैं और क्या सभी पेड़ एक साथ खिलते हैं। यह एक चुनौती भरा काम है और इसके लिए बहुत सारे लोगों, बहुत सारे पेड़ों और बहुत सारे धैर्य की ज़रूरत है।

खुशी की बात यह है कि इस काम में सयाना साबू जितनी रुचि लेने वाले टीचर और छात्रों का एक समूह है जो पूरी निष्ठा के साथ इस काम को करते आ रहा है। यह सीज़नवॉच (SeasonWatch) नामक एक नागरिक विज्ञान प्रोजेक्ट के ज़रिए हुआ है। क्या उनकी मेहनत अमलतास के इस मामले को जानने में कुछ योगदान कर सकती है? चलो देखते हैं...

चित्र 1 - केरल में अमलतास के उन सारे पेड़ों की लोकेशन जिनका सीज़नवॉच के तहत अवलोकन किया जा रहा है।

फूलों के खिलने के पैटर्न को समझने का सबसे आसान तरीका है सौ-सौ पेड़ों के समूह में उनको समझना। किसी एक किस्म के सौ पेड़ लो। फिर गिनना कि किसी एक समय पर सौ में से कितने पेड़ों पर फूल खिले हैं। ऐसी गिनती हर हफ्ते हो सकती है। ज़रूरी नहीं है कि एक ही व्यक्ति सारे सौ पेड़ों को गिने। अलग-अलग लोग ऐसी गिनती कर सकते हैं। सौ लोग भी एक-एक पेड़ का अवलोकन करें तो कोई दिक्कत नहीं। हाँ, सारे लोगों को किसी एक व्यक्ति को बताना होगा कि उन्होंने अपने पेड़ पर क्या देखा। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी एक किस्म के या किसी एक समूह में सौ से भी कम पेड़ मिलें। इससे भी प्रतिशत का पता चल जाता है।

सयाना साबू और सीज़नवॉच के अन्य सदस्यों ने यही किया। अपने-अपने घर-स्कूल व इलाके में उन्होंने अमलतास के पेड़ों का हर हफ्ते अवलोकन किया। अन्य कुछ बातों के साथ-साथ दो बातें जो उन्होंने दर्ज की, वो यह थीं कि पेड़ पर फूल हैं या नहीं, और हर डाली-टहनी पर फूल हैं या नहीं। 60 पेड़ों के आँकड़ों को सीज़नवॉच के आयोजकों ने इसी तरह इकट्ठा किया। इन आँकड़ों को तुम एक ग्राफ के रूप में देख सकते हो। 2015 से 2018 के हर हफ्ते को आड़े अक्ष पर दिया है। खड़े अक्ष पर उन हफ्तों में अमलतास के उन पेड़ों के प्रतिशत दिए हैं जिन पर कम से कम कुछ फूल थे। यह ग्राफ दिल की धड़कन बताने वाला कार्डियोग्रैम जैसा दिखता है। लेकिन यह दिल की नहीं, अमलतास पेड़ों की नब्ज़ दर्शाता है।

अमलतास पेड़ों के प्रतिशत जिन पर फूल लगे हैं

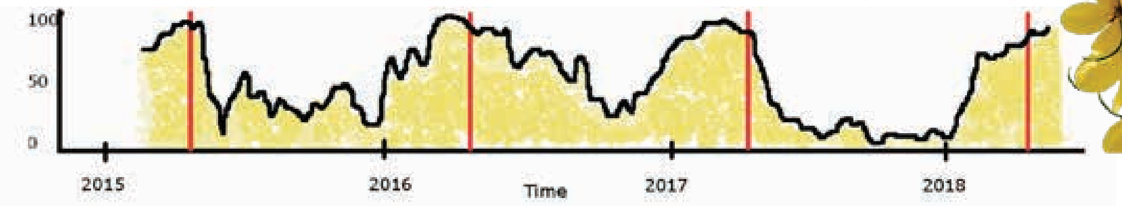

ग्राफ 1

ग्राफ में लाल लकीरें विशु के त्योहार को चिन्हित करती हैं। ग्राफ 1 देखकर तुमको इतना तो समझ में आ ही गया होगा कि साल के किसी भी हफ्ते में कम से कम 10 प्रतिशत पेड़ों पर कुछ फूल तो दिखते ही हैं। लेकिन विशु के हफ्ते में 80-100 प्रतिशत पेड़ों पर कुछ तो फूल खिलते हैं।

अब अगर हम यह देखें कि कितने प्रतिशत पेड़ों पर किसी भी हफ्ते में सारे फूल खिले हैं यानी कि हर टहनी या ज़्यादातर टहनियों पर फूल दिखते हैं, तो हमें पेड़ का एक अलग कार्डियोग्रैम मिलता है।

अमलतास पेड़ों के प्रतिशत जो फूलों से लदे हुए हैं

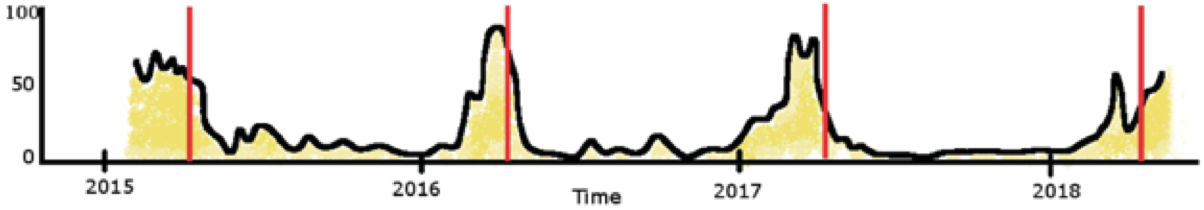

ग्राफ 2 - केरल में फूलों से लदे हुए अमलतास पेड़ों के प्रतिशत।

इस ग्राफ में तुम देख सकते हो कि 80 प्रतिशत तक पेड़ विशु के एक हफ्ते पहले तक खिल उठते हैं। 2017 में ज़्यादातर पेड़ विशु से पहले ही खिल गए थे और 2018 में पेड़ इससे भी पहले खिल गए थे।

कुल मिलाकर ये ग्राफ हमसे क्या कहते हैं? ऐसा लगता है मानो केरल में अमलतास विशु त्योहार से पहले ही पूरी तरह खिल उठते हैं। ये त्योहार पर नहीं होता है। 2018 में पेड़ विशु से पहले पूरी तरह खिल उठे थे और त्योहार के बाद भी फिर से पूरी तरह खिलने लग गए। सवाल उठता है कि क्या ये पैटर्न सामान्य हैं?

इस चर्चा से पहले कुछ बातों को यहाँ रखने की ज़रूरत है। केरल के लाखों अमलतास पेड़ों में से सिर्फ 60 पेड़ों की यहाँ बात हो रही है। सोचने वाली बात है कि क्या ये 60 पेड़ उन लाखों पेड़ों के पैटर्न बतला रहे हैं? साथ में पिछले कुछ सालों के पैटर्न ही हमने यहाँ देखे हैं। अमलतास के फूलने के पैटर्न में बदलाव हो रहे हैं या नहीं इस सवाल के जवाब के लिए हमें कई और सालों के लिए अवलोकन करना होगा। कुछ ही पेड़ों के अवलोकन से हमें कुछ रोचक संकेत देखने को मिले हैं। दावे के साथ कुछ भी कहने के लिए हमें ज़्यादा पेड़ों और ज़्यादा समय उनका अवलोकन करने की ज़रूरत पड़ेगी।

तभी हम कह पाएँगे कि विशु मनाने वाले लोगों को त्योहार के लिए अमलतास के फूल कब तक मिलेंगे।

अनुवादः विनता विश्वनाथन

यदि तुम सीज़नवॉच में शामिल होना चाहो तो chakmak@eklavya.in पर हमसे सम्पर्क करना।

गीता रामस्वामी सीज़नवॉच नागरिक विज्ञान प्रोजेक्ट का नेतृत्व करती हैं और सुहेल कादर के साथ नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन (एनसीएफ) से जुड़ी हैं। सीज़नवॉच (SeasonWatch) एनसीएफ, राष्ट्रीय जीव विज्ञान केन्द्र और विप्रो फाउण्डेशन की सहकारिता से चलता है। केरल में इनके क्षेत्रीय पार्टनर मातृभूमि-SEED हैं

यह लेख 26 जून 2018 को द वायर, एक ऑनलाइन प्रकाशन में छपा था - https://thewire.in/environment/the-case-of-the-confusing-kanikonna-trees

पेज 21 से जारी...

"हाँ, सब मर जाएँगी।" दादाजी ने कहा। मुनिया और ज़्यादा उदास हो गई। वह फिर से नदी की तरफ देखने लगी। उसे लगा कि नदी भी उदास है।

वह कई दिनों तक नदी के बारे में सोचती रही। सवेरे छत पर जाती तो नदी को देखती रहती। छत पर से नदी थोड़ी-थोड़ी दिखती। फिर एक दिन उसने नदी का चित्र बनाया। उसे लगा कि चित्र की नदी भी उदास है। उदास नदी का चित्र। फिर वह सोचने लगी। दादाजी ने नदी के बारे में जो कुछ बताया था उस बारे में! नदी सूखने से किस तरह से बच पाएगी इस बारे में! सोचते-सोचते सो गई।

अगले दिन रोज़ की तरह सवेरा हुआ। चिड़िया-कौए, पेड़-पौधे जागे। मुनिया जागी। मुनिया के मम्मी-पापा, दादाजी जागे। सब अपने-अपने काम में लग गए। काफी देर सब अपना-अपना काम करते रहे। इस बीच किसी को मुनिया का ध्यान नहीं आया। अचानक दादाजी का ध्यान गया कि मुनिया बहुत देर से दिखाई नहीं दे रही है! उन्होंने पुकारा। जवाब नहीं मिलने पर पापा-मम्मी ने भी पुकारा। जब जवाब नहीं मिला तब सब उसे ढूँढने लगे। घर के सब कमरे देखे। आँगन और पिछवाड़े में जाकर देखा। छत पर देखा। आसपास देखा। पड़ोस में जाकर पूछा। मुनिया कहीं नहीं थी। अब सब को घबराहट होने लगी। दादा जी, मम्मी-पापा के साथ पड़ोस के लोग भी ढूँढने लगे। ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे।

इतने में मुनिया आती हुई दिखी। वह नदी तरफ से आ रही थी। वैसे वह अकेली नदी तरफ जाती नहीं थी। हमेशा या तो दादाजी या फिर मम्मी-पापा साथ होते थे। उसे नदी तरफ अकेले जाने से मना किया गया था।

पास आते ही मम्मी ने उसे ज़ोर-से अपनी बाँहों में भींच लिया।

"कहाँ गई थी?" डाँटकर पूछा गया।

"नदी तरफ!"

"क्यों?"

"नदी के पास पौधा लगाने। दादाजी आपने कहा था न कि नदी के आसपास जंगल, पेड़-पौधे होंगे तो बरसात अच्छी होगी और बरसात होने से नदी में खूब पानी रहेगा। नदी कभी सूखेगी नहीं। इसलिए मैं पौधा लगाने गई थी।" कहकर उसने दादाजी की तरफ देखा। फिर पूछा, "दादाजी, अब नदी नहीं सूखेगी न?"

"हाँ बेटा, अब नदी नहीं सूखेगी।" दादाजी ने मुस्कराकर कहा और उसका सिर सहलाने लगे।

मेरी पाती

वैष्णवी ज्ञानेश्वर बेलदार, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्था, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

दिनांक 6-8-2018

प्रिय चिमण,

कैसे हो तुम? तुम जहाँ कहीं भी हो, ठीक हो ऐसी आशा करती हूँ। चिमण, मुझे तुम्हारी बहुत-बहुत-बहुत याद आती है। तुम क्यों ऐसे अचानक घर छोड़कर गए? तुमने जब से घर छोड़ा है, तब से डूब्री ने खाना-पीना छोड़ दिया है। वह सिर्फ तुम्हें ही ढूँढने में लगी रहती है। पर वह अब हमारे बीच नहीं रही, वह कब की भगवान को प्यारी हो गई। तुम भी हो या नहीं, मुझे मालूम नहीं। अगर तुम होगे तो तुम्हें नया घर मिल गया होगा। शायद हमसे भी ज़्यादा प्यार करनेवाले लोग मिल गए होंगे।

चिमण तुम और डूब्री जब से मेरी ज़िन्दगी में आए थे तब से मुझे एक नया आधार मिल गया था। मैं अपने मन में छुपी सारी बातें तुम्हें बताकर अपना मन हल्का कर लेती थी। अब वह आधार भी जैसे चला गया है। चिमण, पता है तुम्हारी डूब्री का कुत्तों ने पीछा किया। पर मैं उसे बचाकर घर ले आई। पर फिर भी वह बहुत घबराई हुई थी। उस दिन से वह एक महीने तक सिर्फ पानी पर ज़िन्दा रही। पर वह पानी उसे हज़म ना हो पाता था। मैंने डॉक्टर को बुलाया। उन्होंने उसे दो इंजेक्शन दिए और दूसरे ही दिन वह बाहर टहलने लगी। धीरे-धीरे उसकी स्थिति और भी गम्भीर होने लगी। इसलिए मैंने उसे बारामती के अच्छे डॉक्टर के पास ले जाने का निश्चय किया। उस डॉक्टर ने डूब्री के लिए हज़ार रुपयों की दवाइयाँ दीं। पर दूसरे ही दिन वह यह दुनिया छोड़कर चली गई। वह आखिर तक मौत से जूझती रही, झगड़ती रही।

चिमण! आ जाओ ना वापस, मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। तुम्हारी अनुपस्थिति मुझे हर पल सताती है। तुम हर वक्त मेरी आँखों के सामने हो ऐसा लगता है। तुम्हारे वह गुबराले से गाल, वह नीली आँखें जो फोटो खींचते समय लाल दिखती

चित्र: मुक्ता
पाँचवीं, अक्षरनन्दन स्कूल
पुणे, महाराष्ट्र

थीं, तुम्हारे सफेद चमकीले बाल जिन पर तुम ज़रा-सा भी दाग न लगने देते, तुम्हारी गुच्छेदार पूँछ देखने का मन करता है। तुम्हारी वह ढूर्र-ढूर्र की आवाज़, जो तुम जब गोद में बैठते थे, तब तुम्हारे पेट से बड़े प्यार से आती थी, वह बहुत प्यारी लगती थी। जो मैं अब बहुत याद करती हूँ। मुझे तुम्हारी हर चीज़ की गैर-हाज़िरी तंग करती है और यह याद मुझे हर पल आती रहे इसलिए मैं तुम्हारे जैसा ही एक डांबिस बिल्ला लेकर आई हूँ। तुम्हारी और डूब्री के याद के लिए मैं हर महीने तुम्हारें बच्चों को मिलने जाती हूँ।

अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हूँ! मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ , आओगे ना किसी ना किसी रूप में फिर से मुझे मिलने.....?

तुम्हारी दोस्त,

वैष्णवी

चुनाव

आदित्य भगत, दसवीं, ग्राम मनियाँ

अपनी चमचमाती कार से
नेताजी आते हैं
कार से उतरकर वे
अपनी तोंद सहलाते हैं
जब-जब भी चुनाव आता
वोट माँगने आते हैं
हाथ जोड़कर जनता के सामने
झूठी कसमें खाते हैं

गोली, रुपए, तोप के दम पर
वे चुनाव जीत जाते हैं
फिर पाँच साल तक अपने बँगले में
खूब आराम फरमाते हैं

पाँच साल जब बीतते हैं
वोट माँगने आ जाते हैं
जब-जब भी चुनाव आता
नेताजी आ जाते हैं

जब चुनाव आता है
भाषण शुरू हो जाता है
आरोप-प्रत्यारोप चलता है
दल बदलाव शुरू हो जाता है

आइए-आइए हमारी पार्टी में
नेता हाँक लगाते हैं
कभी-कभी तो पैसे के बल पर
वोट खरीदे जाते हैं

चित्र: रजन्ती नाग, तीसरी, बचपन बनाओ, दन्तेवाड़ा, छत्तीसगढ़

झूठा सपेरा

दिया रावत
पाँचवीं, रा. प्रा. विद्याल,य ओजली, पौड़ी, उत्तराखण्ड

एक गाँव था। उस गाँव में एक सपेरा रहता था। उस गाँव में साँप बहुत होते थे। उस सपेरे को जब लोग अपने घर बुलाते तो वह अपनी टोकरी में नकली साँप रखकर उन्हें दिखा देता और उनसे काफी सारा पैसा ले लेता। एक बार एक आदमी बोला, "हमने सपेरे से इतने साँप पकड़वा लिए लेकिन साँपों की संख्या कम ही नहीं होती है।" फिर उन्होंने पता लगाने की सोचा। इस बार जब एक आदमी के घर साँप आया तो उसने सपेरे को बुलाया। जब वह सपेरा साँप पकड़ने गया और अपनी टोकरी में नकली साँप रख रहा था उन्होंने उसे देख लिया। वह पकड़ा गया था। गुस्से में लोगों ने उसे गाँव से निकाल दिया।

छात्रावास का मेरा अनुभव

शिवाक देवड़े
आठवीं, आदिवासी छात्रावास माध्यमिक विद्यालय, रैबिदपुरा, खरगोन, मध्य प्रदेश

हमें छात्रावास में अच्छा लगता है और कल मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि कल हमने 1 नवम्बर मनाया। छात्रावास में टाइमपास के लिए एक टीवी है। जब मुझे बुरा लगता है तब मुझे घर की याद आ जाती है। एक दिन जब मैं और अशोक टीवी रखने की अलमारी को बजाकर नाच कर रहे थे और वीडियो बना रहे थे तो सर आ गए थे और उन्होंने कहा कि अशोक ढोल अच्छा बजा लेता है। वहाँ हमें थोड़े दिन योग करवाया और फिर बन्द करवा दिया। मैं 15-20 दिन छात्रावास में रहता हूँ फिर घर चला जाता हूँ। हमारे छात्रावास में खेलने के लिए चीज़ें होतीं तो अच्छा होता। वहाँ अखबार आता है और सभी बच्चे पढ़ते हैं। पर अगर लाइब्रेरी भी होती तो बहुत अच्छा होता।

चित्र: आरोही वडावले, चौथी, जायडस स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, अहमदाबाद, गुजरात

चित्र: अस्मिता चटर्जी, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

मोनू की साइकिल

उमेश कुमार सिंह, अरण्यावास
भोपाल, मध्य प्रदेश

मोनू एक साइकिल लाई
फिर उसको खूब चलाई
इतनी चलाई, इतनी चलाई
हवा से उसकी बातें कराई।
पंचर की एक दुकान आई
मोनू ने फिर हवा भरवाई
फिर उसको खूब चलाई
मोनू एक साइकिल लाई।

गधे और बाप बेटे

सुरभि, सातवीं, सेंट मेरी कान्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

एक बार एक किसान रहता था। उसका एक बेटा था। एक दिन वह मेले में जा रहा था। रास्ते में उन्हें एक आदमी मिला। उसने कहा कि तुम लकड़ी का गट्ठर गधे के ऊपर रख दो। उसने कहा कि गधा बीमार हो गया है। उसने मन ही मन में कहा कि गधा बीमार हो गया है तो इसे धूप में लेकर क्यों घूम रहा है? थोड़ी दूर जाकर उस आदमी ने कहा कि तुम इसे बाहर लेकर क्यों घूम रहे हो? उसने कहा कि मुझे इसको जानवर के डॉक्टर के पास ले जाना है, लेकिन अभी मुझे मेले में जाना है।

चित्र: संजीत कुमार, चौदह वर्ष, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

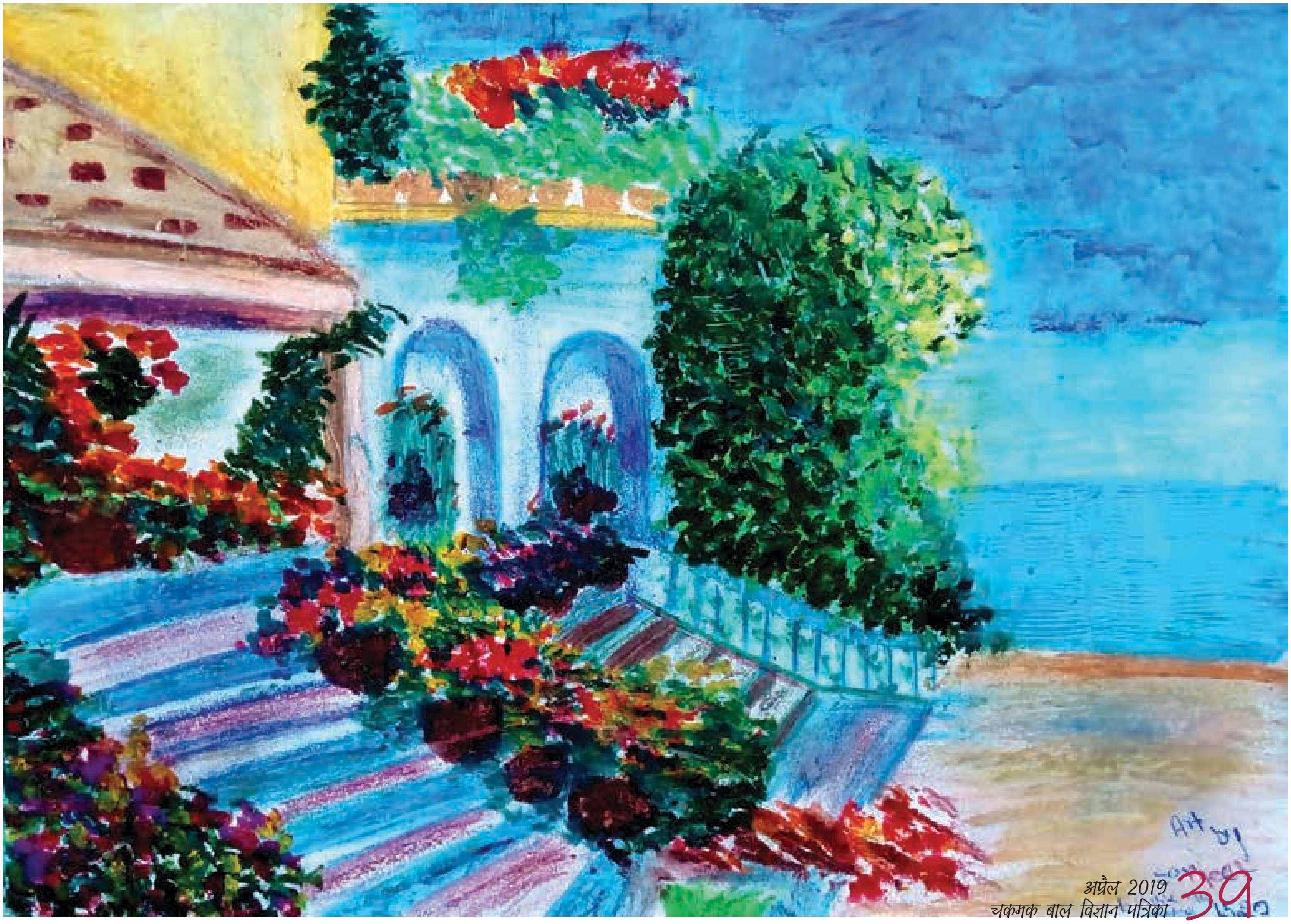

भूल भुलैया

चित्र: शिवात्मिका लाला

माथापच्ची

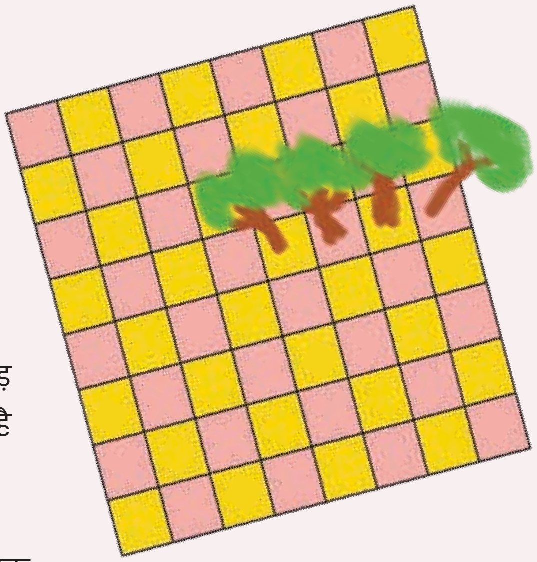

1. एक आदमी के पास एक चौकोर बाग है जिसमें आम के 4 बड़े-बड़े पेड़ हैं। वह इसे समान माप व आकृति के 4 ऐसे भागों में बाँटना चाहता है कि हरेक भाग में आम का 1 पेड़ हो। कैसे कर सकते हैं?

2. एक पुरानी दीवार घड़ी गिरकर 3 ऐसे टुकड़ों में टूटी कि उनमें से हरेक टुकड़े में लिखी संख्याओं का जोड़ एक समान है। क्या तुम बता सकते हो कि घड़ी के 3 टुकड़ों में कौन-कौन से अंक रहे होंगे?

3. जसमीत होटल के कमरे में अपने बिस्तर पर लेटा था लेकिन सो नहीं पा रहा था। फिर उसने अपने बगल वाले कमरे में फोन किया और बिना कुछ कहे फोन रखकर तुरन्त सो गया उसने ऐसा क्यों किया होगा?

4. निला अपने वकील से जेल में बात कर रही थी। दोनों इस बात से निराश थे कि जज ने जमानत देने से इंकार कर दिया। थोड़ी देर बाद निला अपने घर वापिस चली गई। यह कैसे सम्भव है?

फटाफट बताओ कि

ऐसी कौन-सी चीज़ है जो है तो सोने की, लेकिन सोने से बहुत सस्ती है?

(चारपाई)

वह क्या है जिसे इस्तेमाल करने के लिए फेंक देते हैं और जब इस्तेमाल ना करना हो तो रख देते हैं?

(लंगर/anchor)

गोल हूँ पर गेंद नहीं
पूँछ है पर जानवर नहीं
पूँछ पकड़कर खेलें बच्चे
फिर भी मेरे आँसू ना निकलें

(गुब्बारा)

एक चीज़ मुख काला जिसका,
बिन बोले सब कहती है
पाँव नहीं है पर हाथों में,
सबके चलती रहती है

(कलम)

		5		9		8	2	
4		8		1			6	
7			3		5			
	1	2					8	6
			6		1			
	5		2		8			9
			1		3	7		
	8			5		6		1
5	7			6				2

सुडोकू-18

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1.

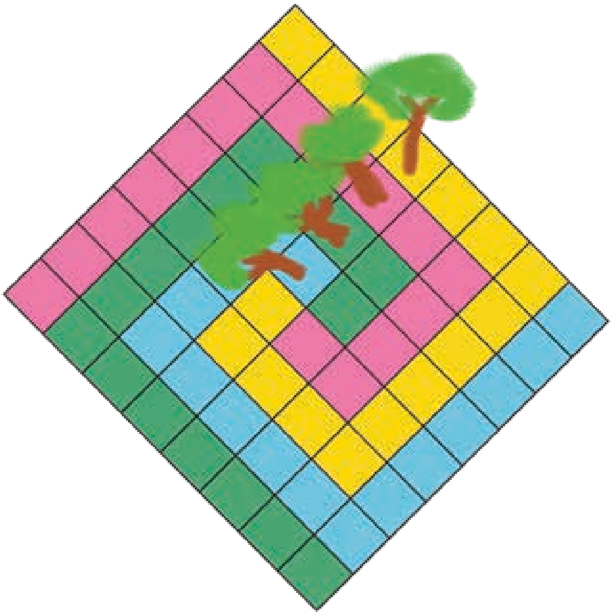

2. घड़ी में लिखी सभी संख्याओं का कुल जोड़ होता है 1 + 2 + ... + 12 = 78। इसलिए हर टुकड़े में लिखी संख्याओं का जोड़ 26 होना चाहिए। और ऐसा केवल तभी हो सकता है जब घड़ी तीन समान्तर रेखाओं (1,2,11,12), (3,4,9,10), (5,6,7,8) में टूटे।

3. क्योंकि बगल के कमरे में सोया व्यक्ति इतनी ज़ोर से खर्राटे ले रहा था कि जसमीत सो नहीं पा रहा था। इसलिए उसने उसे फोन किया और दोबारा उसके खर्राटे लेने से पहले ही वह सो गया।

4. क्योंकि निला का वकील जेल में था और वह उससे मिलने गई थी।।

भूलभुलैया का जवाब

मार्च की चित्र पहेली का जवाब

पि 1	च	का	री 2		वा 3	रू	द 4	
या			छ 5	क 6	ड़ा		रा 7	ख 8
नो 9	क 10			च		सू 11	र	त
	च 12	बू	त 13	रा		रा		रा
पा 14	ना		न्दू		चौ 15	ख	ट 16	
प 17	र	का 18	र		को		ब 19	स 20
ड़		र		कु 21	र	सी 22		रौ
		खा 23	र	क		प 24	पी 25	ता
झ 26	र	ना		र 27	द्दी		पा	

सुडोकू-17 का जवाब

1	4	2	7	8	9	5	3	6
9	7	5	3	1	6	8	2	4
3	6	8	5	4	2	7	1	9
5	9	7	2	6	4	3	8	1
6	2	1	8	3	7	9	4	5
4	8	3	1	9	5	6	7	2
7	1	9	6	2	8	4	5	3
2	5	6	4	7	3	1	9	8
8	3	4	9	5	1	2	6	7

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ (लाल गोला)

ऊपर से नीचे (नीला चौकोर)

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

शिक्षक एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए अवसर

Azim Premji Foundation

शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत एवं रुचि रखने वाले योग्य संदर्भ व्यक्तियों के लिए अवसर

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन अपने विभिन्न राज्यों के जिला संस्थानों में कार्य करने हेतु **शिक्षक एवं शिक्षक-प्रशिक्षक** पदों के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका: सरकारी स्कूलों की प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कर रहे शिक्षकों का सतत क्षमता संवर्धन।

आवश्यक योग्यता: स्नातक/स्नातकोत्तर

अनुभव: किसी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों में कम से कम दो वर्ष के शिक्षण कार्य का अनुभव अनिवार्य।

नोट - पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त लोगों के लिए अनुभव आवश्यक नहीं है।

शिक्षा से जुडी गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यानुभव रखने वाले व्यक्ति भी आवेदन कर सकते हैं । कम से कम दो वर्ष का फील्ड में कार्य करने का अनुभव आवश्यक ।

शिक्षक की भूमिका: चयनित शिक्षक अज़ीम प्रेमजी स्कूल में बच्चों के साथ जुड़कर बेहतर शिक्षण माहौल व शिक्षण प्रक्रिया सुनिश्चित करने में अपना योगदान देंगे।

आवश्यक योग्यता

1. किसी भी एक विषय में स्नातक या स्नातकोत्तर एवं डी.एड/बी.एड/एम.एड:- कला (Fine Arts) बचपन की देखभाल और शिक्षा (ECCE), संगीत, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान
2. शिक्षक के पद के आवेदन के लिए अनुभव आवश्यक नहीं है।

चयन प्रक्रिया: लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार

परीक्षा तिथि: 28 अप्रैल एवं 26 मई 2019

इच्छुक अभ्यर्थी निम्न वेबसाइट पते पर अपना पंजीकरण (ऑनलाइन) कर सकते हैं।
शिक्षक पद के लिए आवेदन – https://bit.ly/2RRD5uo
शिक्षक-प्रशिक्षक पद के लिए आवेदन – https://bit.ly/2Mx2kwb

अधिक जानकारी के लिए https://azimpremjifoundation.org/career-list एवं टोल फ्री नंबर-18002740101 (सोमवार-शुक्रवार, 9 A.M - 6 P.M) पर संपर्क कर सकते हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन